

## डॉ. मे यंग, बाइबिल के विलाप के उद्देश्य, एक उदाहरण के माध्यम से कार्य करना - भजन 42-43, सत्र 3

यह डॉ. मे यंग हैं जो बाइबिल के विलाप के उद्देश्यों पर अपने शिक्षण में, एक उदाहरण के माध्यम से काम कर रही हैं, सत्र तीन। तो आपका फिर से स्वागत है। और इस व्याख्यान में, मैं बाइबिल के विलाप के उद्देश्यों के बारे में बात करने जा रही हूँ, साथ ही एक अभ्यास के उदाहरण के माध्यम से बताऊँगी कि हम शास्त्र के भीतर कैसे देख सकते हैं और उस अर्थ में एक विशिष्ट स्थिति के लिए विलाप से कैसे निपट सकते हैं।

इसलिए जब हम इस बारे में सोचते हैं और इस विषय पर चर्चा करते हैं, तो मैं सबसे पहले हमें यह बताना चाहता हूँ कि जब हम बाइबिल के विलाप के उद्देश्यों के बारे में बात कर रहे हैं, तो मैं यहाँ इस बात का संदर्भ देना चाहता हूँ कि हम एक पतित दुनिया में कैसे रहते हैं। और यहाँ तक कि ईसाई होने के नाते, विश्वासियों के तौर पर, हम जानते हैं कि क्रूस के ज़रिए, यीशु ने हमें कब्र से परे आशा दी है। इसलिए यहाँ हमारी आशा ज़रूरी नहीं कि इस दुनिया में ही गिरे।

लेकिन साथ ही, हम इस वर्तमान दुनिया में रहते हैं। और इसलिए, हम दुनिया की अपूर्ण प्रकृति, दुख और चीजों और दुनिया की पतित प्रकृति के साथ भगवान के साथ जीवन का अनुभव करते हैं। और इसलिए कभी-कभी, अगर हम ईमानदार हैं, तो हम देख सकते हैं कि विश्वास की हमारी भविष्य की आशा भी हमें हमेशा वह आराम नहीं देती है जो हम इस विशेष समय पर चाहते हैं।

और इसलिए, हम दुख के मामले में कुछ से गुज़र रहे हैं, आप जानते हैं, हम धर्मग्रंथ पढ़ते हैं और हम जानते हैं कि सुबह खुशी आती है। लेकिन कभी-कभी हमारी आत्मा में वह दर्द शांत नहीं होता। और इसलिए, हम उसके बारे में कैसे सोचते हैं? और इसलिए मैं सोचता हूँ कि यहीं पर विलाप की भूमिका आती है और यह हमारी सहायता करती है, और इस प्रकार यह हमें अभी परमेश्वर से जुड़ने में सहायता करती है।

और इसलिए यहाँ, इस भविष्य की आशा की प्रतीक्षा करने के बजाय, हम वास्तव में आशा की ओर बढ़ सकते हैं क्योंकि हम यहाँ और अभी विलाप करते हैं। इसलिए, व्यावहारिक रूप से कहें तो विलाप करना एक बहुआयामी साधन है जिसे ईश्वर ने कृपापूर्वक हमें उस दुनिया की टूटन और गिरी हुई स्थिति को समझने में मदद करने के लिए प्रदान किया है जिसमें हम रहते हैं। इसलिए, चाहे दर्द या हानि या अन्याय के माध्यम से अनुभव किया जाए, चाहे वह कुछ भी हो, ईश्वर ने हमें यह उपकरण और यह साधन प्रदान किया है जिससे हम उससे जुड़ सकें क्योंकि हम एक कठिन दुनिया और एक ऐसी दुनिया में रह रहे हैं जो इस तरह से गिरी हुई और पीड़ा से भरी हुई है।

इसलिए मुझे लगता है कि विलाप के कई कार्य हैं। और इसलिए यह हमें पूर्णता और अधिक आशा की ओर बढ़ने में मदद करेगा। और अधिक विशेष रूप से, इस समय, मैं विलाप के उद्देश्यों के संदर्भ में तीन सामान्य श्रेणियों के बारे में बात करना चाहूँगा, जिनके बारे में मैं इस समय हमें बताना चाहता हूँ।

और इसलिए यहाँ सबसे पहले हमें अपने दर्द को आवाज़ देनी है। और मैं इसके बारे में थोड़ी देर में बात करूँगा। और फिर ईश्वर से जुड़ने का एक रास्ता प्रदान करना, और फिर अंततः हमें बड़ी आशा की ओर ले जाना।

और इसलिए यहाँ मैं यही सोचता हूँ, जैसा कि मैं यहाँ विलाप के बारे में सोचता हूँ, कुछ उद्देश्य हैं जिन्हें हम इस तरह से देख सकते हैं। तो, यहाँ पहला उद्देश्य हमारे दर्द को आवाज़ देना है। और इसलिए यह, फिर से, हमारे दर्द की स्वीकृति है।

और इसलिए, हम उस चीज़ से निपट नहीं सकते जिसे हम स्वीकार नहीं करते। और इसलिए, फिर से, मैं इसे, आप जानते हैं, उपचार की दिशा में पहला कदम मानूँगा। इसलिए, बहुत बार, आप जानते हैं, हम तब तक उपचार नहीं पा सकते जब तक कि हम अपने घाव को उजागर न करें या यह न दिखाएँ कि हम वास्तव में किससे निपट रहे हैं।

और कई बार, अगर आप शारीरिक दृष्टिकोण से इसके बारे में सोचते हैं, तो आप डॉक्टर के पास जाते हैं, आप जानते हैं, कभी-कभी आपको वास्तव में वह कदम उठाना पड़ता है, वह पहला कदम, वास्तव में डॉक्टर को दिखाने के लिए कि क्या हो रहा है। और कभी-कभी अगर हम कुछ समय के लिए किसी चीज़ को छोड़ देते हैं, तो यह बहुत बुरा हो सकता है। लेकिन हमें आगे बढ़ना होगा और खुद को कमजोर बनाना होगा, डॉक्टर को दिखाना होगा कि हमारे दर्द को स्वीकार करने के लिए यहाँ क्या हो रहा है, यह स्वीकार करने के लिए कि कुछ गड़बड़ है, ताकि हम वास्तव में उस दर्द से निपटने के सही रास्ते पर आ सकें।

और इसलिए, हम अक्सर भगवान को महान चिकित्सक के रूप में देखते हैं। इस अर्थ में वह हमारे उपचारक हैं। और इसलिए, हम उनके पास इस अर्थ में आते हैं कि हम यहाँ जो दर्द महसूस कर रहे हैं, उसे स्वीकार करते हैं।

और इसलिए किसी कारण से, ईसाइयों ने आध्यात्मिकता को खुश या ठीक होने के बराबर माना है ताकि हम विश्वास करें कि खुश रहना वास्तव में कभी-कभी भगवान का अधिक सम्मान करता है। यह कुछ ऐसा हो सकता है, आप जानते हैं, हम यह भी महसूस नहीं करते कि हम ऐसा सोचते हैं, लेकिन कभी-कभी यह कुछ ऐसा होता है जो यहाँ अंतर्निहित होता है कि हम सोचते हैं कि खुश रहना भगवान को अधिक सम्मान दिलाएगा, बजाय इसके कि हम वास्तव में वास्तविक हों और इस तरह से स्वीकार करें। हम क्या नहीं करते यह विडम्बना है कि जब हम अपने दर्द और संदेहों को दबा देते हैं, तो हम वास्तव में अपने विश्वास को मजबूत करने के बजाय कमजोर कर देते हैं।

और इसलिए यहाँ, आप जानते हैं, इससे निपटने के बजाय, हम यहाँ अपने विश्वास को कमजोर कर रहे हैं। तो, यह एक उद्धरण है, आप जानते हैं, विश्वास उस आत्मा में प्रदर्शित नहीं होता है जो संघर्ष नहीं करती है। वास्तव में, बाइबिल का विश्वास वह है जो भलाई के बजाय परीक्षणों के माध्यम से अधिक मजबूत होता है।

दुख अक्सर शुद्धिकरण की एक प्रक्रिया है जो हमें शुद्ध करती है और हमारी सच्ची भावनाओं, पापों, भय, संदेहों को सतह पर लाती है। इन भावनाओं को दबाने या छिपाने के बजाय, हमें ईमानदार होना सीखना चाहिए। और इसलिए यहाँ, आप जानते हैं, यह उस विश्वास के बारे में नहीं है जो संघर्ष नहीं करता है, लेकिन यहाँ इस तरह से इसे मजबूत किया गया है।

इसलिए, हमें ऐसे लोग बनना होगा जो कहें कि हम ईश्वर और खुद के सामने और दूसरों के सामने प्रामाणिक रूप से जीने के लिए तैयार हैं। और इसलिए हमें नुकसान और दर्द को सहने के लिए तैयार रहना होगा। और इसलिए यह बहुत बाइबिल से संबंधित है।

और इसलिए यहाँ, यहाँ तक कि प्रेरितों के काम 8 में इस उदाहरण में, यह बात करता है, शास्त्र में बहुत सारे उदाहरण हैं जहाँ यह कहा गया है, आप जानते हैं, यहाँ एक भक्त व्यक्ति ने स्टीफन को दफनाया और उनके लिए बहुत विलाप किया। तो, भावनाओं को प्रदर्शित करने का एक वास्तविक अर्थ है। यह, आप जानते हैं, इसे स्वीकार करने और इसे सहने के बारे में नहीं है, बल्कि वास्तव में यहाँ भावनाओं को प्रदर्शित करना और नुकसान का शोक मनाना और उन चीजों से निपटना है।

और इसलिए, शास्त्र हमें इसके उदाहरण भी देते हैं। और इसलिए जब हम अपने दर्द को स्वीकार करते हैं, भले ही वह अस्थायी हो, हम ईश्वर और दूसरों के लिए हमारे साथ उपचार में प्रवेश करने का स्थान बनाते हैं। तो यहाँ, आप जानते हैं, जब हम इन चीजों को स्वीकार कर रहे हैं, तो हम वास्तव में हम स्वयं को ईश्वर के साथ जुड़ने के साथ-साथ दूसरों के साथ जुड़ने के लिए भी खोलते हैं।

और इसलिए, अपनी पीड़ा को आवाज़ देने का एक हिस्सा खुद को महसूस करने की अनुमति देना है। इसलिए, हालांकि, हम अपने दर्द को चुप कराने और विभिन्न कारणों से अपनी भावनाओं को दबाने की कोशिश करते हैं। इसलिए, यहाँ, अपनी भावनाओं को ठीक करने की अनुमति देने के लिए यहाँ एक तरह की सीख दी गई है।

और इसलिए, कैथलीन ओ'कॉनर ने यहाँ लैमेंटेशन्स एंड द टियर्स ऑफ़ वर्ल्ड पर अपने काम में कहा है कि उपचार के लिए पहली शर्त दर्द और पीड़ा को सामने लाना है। तभी उनकी जाँच की जा सकती है, उन्हें अनुमति दी जा सकती है और उनका हक दिया जा सकता है। अपना हक मांगो, वे करेंगे।

वे न तो कम होंगे और न ही गायब होंगे जब तक कि वे आमने-सामने न मिलें। बोलने से रोका गया दर्द, भूमिगत धकेल दिया गया और नकार दिया गया, एक फेरेट की तरह मुड़ता और मुड़ता रहेगा और सुरंग बनाता रहेगा जब तक कि वह उन प्रकाशहीन स्थानों में एक हिंसक, पहचाने न जा सकने वाले राक्षस में विकसित न हो जाए। और इसलिए यहाँ, आप जानते हैं, दर्द को बढ़ने और सड़ने देने के बजाय उससे निपटना, जैसा कि हम शारीरिक दृष्टिकोण से करना चाहते हैं, हम भावनात्मक दृष्टिकोण से भी उससे निपटना नहीं चाहते हैं।

इसलिए, जब आप अपने दर्द को आवाज़ दे रहे होते हैं, तो आप अपने आप को अपने मन में एक प्रतिध्वनि कक्ष की तरह बैठने नहीं देते हैं। इसलिए, कई बार जब आप भावनाओं या दर्द से जूझ रहे होते हैं, तो आप खुद को अलग-थलग कर लेते हैं, और आपके अपने मन या प्रतिध्वनि कक्ष में, ये भावनाएँ या चीज़ें होती हैं जिनसे आप निपट रहे होते हैं। और इसलिए, जब आप अपने दर्द को आवाज़ दे रहे होते हैं, तो आप भगवान को उस प्रतिध्वनि कक्ष में उस तरह से बोलने की अनुमति दे रहे होते हैं और उन्हें हमारे दिल की गहराई में भी बोलने की अनुमति दे रहे होते हैं।

और इसलिए यह महत्वपूर्ण है क्योंकि हम इसके बारे में भी सोचते हैं। तो, यह, यह, यह कोई संयोग नहीं है कि संज्ञानात्मक मनोचिकित्सा ने आघात से उपचार को मौखिक और लिखित कथात्मक पुनर्कथन से जोड़ा है। तो यह भी दिलचस्प है।

इसलिए जब हम आघात के बारे में सोचते हैं, आघात से जूझ रहे लोग, जब हम मनोचिकित्सा के बारे में सोचते हैं, तो आप जानते हैं, मौखिक और लिखित पुनर्कथन या कथा के बारे में कुछ शक्तिशाली होता है। तो, एक तरह से विलाप में, यहाँ एक तरह का विस्तारित संस्करण है। तो, जून एफ. डिकी ने नोट किया कि संज्ञानात्मक चिकित्सक अपने रोगियों को लिखित या मौखिक माध्यम से पुनर्कथन के माध्यम से उनके आघात की स्मृति को फिर से बनाने में मदद करता है, और फिर संबंधित नकारात्मक भावनाओं को हटाते हुए इसे व्यक्ति की व्यक्तिगत जीवनी में एकीकृत करता है।

और इसलिए यहाँ, इस बारे में सोचने पर, वहाँ है कुछ हद तक पुनर्कथन की शक्ति और जो बातें हम खुद ही दोहराते हैं, वह इस तरह से हमारे प्रतिध्वनि कक्षों में गूँजने के बजाय होती हैं। और इस तरह, यह आघात पीड़ित को अपनी कहानी को पुनः प्राप्त करने में मदद करता है। इसमें एजेंसी की भावना के बारे में कुछ है।

और इसलिए, उन्हें आवाज़ देना। इसलिए यादों को दफनाकर रखने और अवचेतन रूप से कहर बरपाने के बजाय, पीड़ित वास्तव में दर्द का सामना कर सकता है और शोक मना सकता है और परिवर्तन की ओर बढ़ सकता है। और इसलिए इसे दबाने और यह न जानने के बजाय कि जब आप फिर से बता रहे हैं, जब आप इस दर्द को आवाज़ दे रहे हैं, तो आप आगे कैसे बढ़ें, आप वास्तव में एजेंसी होना और वास्तव में अपने आप को इस तरह से आगे बढ़ने और आगे बढ़ने में सक्षम बनाना।

इसलिए, आघात का विवरण तैयार करने से न केवल पीड़ित को अपनी बात कहने का अधिकार मिलता है, बल्कि इससे अकेलेपन की भावना कम होती है, तथा किसी और को अपनी बात कहने का अवसर मिलता है। यहाँ कुछ शक्तिशाली है क्योंकि आपके पास आपके दर्द को देखने वाला और इसे पहचानने वाला कोई है। इसलिए यह प्रक्रिया हमें नियंत्रण या एजेंसी हासिल करने की अनुमति देती है।

इस तरह से देखा जाए तो विलाप भी प्रतिरोध का एक कार्य है। और इसलिए जब हम विलाप और आवाज़ देने के बारे में सोचते हैं, तो यह भी प्रतिरोध का एक कार्य है। इसलिए, जब लोग पीड़ित होते हैं, तो वे अक्सर शक्तिहीन महसूस करते हैं।

इसलिए, कई बार लोग दुख में खुद को शक्तिहीन महसूस करते हैं। वे खुद को आवाज़हीन महसूस करते हैं। और इसलिए विलाप के ज़रिए, आप वास्तव में उस दर्द को आवाज़ देना ताकि वह आवाज़हीनता या शक्तिहीनता जिसे व्यक्ति महसूस करता है, दूर हो जाए।

लेकिन इसलिए, विलाप करें, आप हमारे दर्द और पीड़ा को अंतिम शब्द देने के बजाय हमारी भावनाओं को पुनः प्राप्त कर रहे हैं। और यह हमारे लिए यहाँ महत्वपूर्ण है क्योंकि हम महान आशा की ओर बढ़ने और उस अर्थ में भी इसे पुनः प्राप्त करने के बारे में सोचते हैं। तो, यहाँ यह उद्घरण, यहाँ सिर्फ जुडिथ हरमन ने देखा है कि यहाँ आघात पीड़ितों पर उनके काम में, कि दुःख सहित भावनाओं की पूरी श्रृंखला को महसूस करने की क्षमता को पुनः प्राप्त करना, अपराधी के इरादे के प्रति समर्पण के बजाय प्रतिरोध के कार्य के रूप में समझा जाना चाहिए।

और इसलिए यहाँ भी यह महत्वपूर्ण है। अपने काम में, उन्होंने पाया कि जब आघात के शिकार, चाहे दुर्व्यवहार या हिंसा के अन्य रूपों के माध्यम से, विलाप करने और अपनी भावनाओं को महसूस करने में सक्षम थे, तो वे अपने अपराधियों से बंद हुए बिना भी आगे बढ़ने में सक्षम थे, जो यहाँ आश्चर्यजनक है। वह नोट करती है कि जैसे-जैसे शोक प्रक्रिया आगे बढ़ती है, रोगी पुनर्स्थापन की अधिक सामाजिक, सामान्य, अमूर्त प्रक्रियाओं की कल्पना करने लगता है, जो उसे अपने वर्तमान जीवन पर किसी भी शक्ति को अपराधी को सौंपे बिना अपने न्यायोचित दावों को आगे बढ़ाने की अनुमति देता है।

इसलिए, प्रतिपूर्ति किसी भी तरह से अपराधी को उसके अपराधों से मुक्त नहीं करती है। बल्कि, यह वर्तमान में नैतिक विकल्प के लिए उत्तरजीवी के दावे की पुष्टि करती है। इसलिए आत्म-क्षति, आक्रोश, शर्म और अवसाद के चक्र में फंसे रहने के बजाय, उत्तरजीवी उन सभी चीज़ों के तहत निरंतर अधीनता के लिए तैयार हुए बिना ठीक होने और प्रगति करने में सक्षम हैं जो उन्हें सहना पड़ा था।

मुझे लगता है कि यह वास्तव में महत्वपूर्ण भी है, क्योंकि कभी-कभी जब हम इससे निपट नहीं रहे होते हैं, तो आप जानते हैं कि पीड़ा और दुर्व्यवहार और सभी चीज़ें इस तरह से हमारे ऊपर अंतिम शब्द होती हैं। और इसलिए उस शक्ति को देने के बजाय, जैसा कि आप विलाप करते हैं और आप इसे दोहराते हैं, यह प्रतिरोध का एक प्रकार का कार्य है, अपने आप को निकालने का एक तरीका है और उस पीड़ा को अंतिम शब्द नहीं देना है जिसे आपको उस तरह से भी सहना पड़ा। तो यहाँ एक और तरीका यह है कि विलाप दर्द में लोगों को आवाज़ देता है।

इसलिए यह न केवल उस व्यक्ति को आवाज़ देता है जो पीड़ित है और इन स्थितियों और दर्द से जूझ रहा है और कुछ मायनों में, कुछ तरीकों से प्रतिरोध का कार्य करता है, उपचार ढूँढ़ता है और आगे बढ़ता है, आप इसे अधिक कॉर्पोरेट स्तर पर भी देख सकते हैं। इसलिए दर्द में लोगों को आवाज़ देना। इसलिए, विलाप समुदायों को उन लोगों को समझने में मदद करता है जो दर्द में हैं और उनके साथ खड़े होने में भी मदद करते हैं।

तो यहाँ, जैसा कि हमने पहले भी देखा है, भले ही हमने उस स्थिति को न झेला हो या उससे प्रभावित न हुए हों, हम उन लोगों को देख सकते हैं और स्वीकार कर सकते हैं जो दर्द में हैं

क्योंकि दर्द बहुत अलग-थलग कर सकता है। इसलिए, जब लोग उस दौर से गुज़र रहे होते हैं, तो यह अलग-थलग कर सकता है कि वे अलग-थलग महसूस करते हैं या वे खुद को अलग-थलग कर लेते हैं। इसलिए जो लोग दर्द से गुज़र रहे हैं, वे एक तरह से अलग-थलग महसूस कर सकते हैं।

इसलिए जब हम समुदाय में होते हैं और हम दूसरों को पहचानते और देखते हैं और वे उनके साथ खड़े होते हैं और उनके साथ एकजुटता दिखाते हैं, तो यह वास्तव में इस तरह से पीड़ित को आराम पहुंचाता है। और यहीं पर विलाप की पुस्तक में, मुझे लगता है कि यह शिक्षाप्रद है क्योंकि हम इस बारे में सोचते हैं, कि विलाप की पुस्तक में, यहाँ पहले अध्याय में, आपके पास पीड़ित लेडी सिय्योन या यरुशलम है। और आप उस पहले अध्याय में पाते हैं कि वह किसी को अपने दर्द का गवाह बनाने के लिए बुला रही है।

तो, वहाँ है वास्तव में इस तरह की मिसाल किसी ऐसे व्यक्ति की है जो उसके दर्द को देख सके। तो विलाप 112 में वह पुकार रही है, आप जानते हैं, क्या मेरे दर्द जैसा कोई दर्द है? वह उन लोगों से पूछ रही है जो पास से गुज़र रहे हैं कि वे देखें। और इसलिए इसके अलावा, इस पहले अध्याय में यह प्रतिध्वनि है जिसे पाँच बार दोहराया गया है।

इसमें कहा गया है कि कोई सांत्वना देने वाला नहीं है। इसलिए यहाँ, अध्याय में लगभग चार बार, लेडी ज़ायन द्वारा महसूस किए जा रहे अकेलेपन को दर्शाया गया है। तो वह ऐसा करती है।

उसे ऐसा लगता है कि कोई सांत्वना देने वाला नहीं है। कोई भी ऐसा नहीं है जो इस तरह से उसके दर्द को देख रहा हो। और इसलिए जब हम दूसरे लोगों के दर्द को पहचानते हैं और हम उन्हें उनके दर्द में देखते हैं, तो यह वास्तव में हमें उनके साथ खड़े होने में मदद करता है।

और यह वास्तव में दूसरों के साथ-साथ दुनिया के बारे में भी हमारे दृष्टिकोण को व्यापक बना सकता है। तो, हम इसे देख सकते हैं। तो यहाँ फिर से, कैथलीन ओ'कॉनर कहती हैं कि विलाप की आवाज़ें पाठकों से पीड़ा का सामना करने, उसके बारे में बोलने, उस सत्य के खतरनाक उद्घोषक बनने का आग्रह करती हैं जिसे राष्ट्र, परिवार और व्यक्ति दबाना पसंद करते हैं।

फिर वे हमें अपने दिलों में दबे दर्द का सम्मान करने के लिए आमंत्रित करते हैं, हमारे समाज में अनदेखा किया जाता है और दुनिया के अन्य हिस्सों में हमारे इरादे, ध्यान की मांग करता है। तो कॉर्पोरेट विलाप हमें याद दिलाता है कि हम यहाँ पीड़ा से भरी दुनिया में रहते हैं, लेकिन हम अकेले नहीं हैं। इसलिए, हम यहाँ उन लोगों के साथ पीड़ित हो सकते हैं और हमें यह समझने में मदद करते हैं कि पीड़ा के समय लोगों के लिए कैसे मौजूद रहना है और इस तरह से सामूहिक रूप से पीड़ित होना है।

इसलिए व्यवस्थागत अन्याय को अनदेखा करके उसे सामान्य बनाने के बजाय, विलाप के माध्यम से उसे स्वीकार करने से समुदाय को उन पीड़ाओं को अधिक मुखरता से व्यक्त करने में मदद मिलती है जो झेली गई हैं। और इसलिए यहाँ यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि मुझे लगता है कि कभी-कभी जब हम समाचार सुनते हैं या हम मुश्किल परिस्थितियों से गुज़र रहे होते हैं, आप

जानते हैं, या हम उन सभी चीज़ों के बारे में सुनते हैं जो हो रही हैं, तो हम बहुत अभिभूत हो सकते हैं। हमें यह भी नहीं पता कि क्या करना है।

और हम बस सोचते हैं, आप जानते हैं, मैं सिर्फ़ एक व्यक्ति हूँ। मैं यहाँ हो रहे सभी अन्याय से कैसे निपटूँ? और इसलिए, मुझे लगता है कि यही वह जगह है जहाँ, आप जानते हैं, जब हम सामूहिक रूप से शोक मनाते हैं, तो हम सामान्यीकरण नहीं कर रहे हैं। हम यह नहीं कह रहे हैं कि यह ठीक है।

हम यह नहीं कह रहे हैं कि व्यवस्थागत अन्याय ठीक है और हम इस पर आंखें मूंद रहे हैं या हम खुद को सुन्न कर रहे हैं क्योंकि यह हमारे लिए बहुत भारी है। लेकिन हम विलाप के माध्यम से इसे स्वीकार कर रहे हैं। लेकिन यहाँ सिर्फ़ स्वीकार करना ही नहीं है।

तो यहाँ यह सिर्फ़ स्वीकारोक्ति तक ही सीमित नहीं है। सामूहिक शोक का यह कार्य बदलाव लाने का आमंत्रण भी है। और इसलिए जब हम सामूहिक रूप से शोक मनाते हैं, तो हम सिर्फ़ यह नहीं कह रहे होते कि ये चीज़ें बुरी हैं, बल्कि हम बदलाव का आमंत्रण भी दे रहे होते हैं।

हम कह रहे हैं कि कुछ गलत है और हम बदलाव चाहते हैं। और इसलिए जब समुदाय सामूहिक रूप से दर्द को स्वीकार करने के लिए एक साथ आता है, तो यह अन्याय और बुराई और दर्द के बारे में सच बोलता है। तो आप जानते हैं, आप भाइयों और बहनों के साथ खड़े हैं।

आप कह रहे हैं कि यह सही नहीं है। आप बदलाव का आह्वान कर रहे हैं। आप अन्याय, बुराई और दर्द के खिलाफ सच बोल रहे हैं।

इसलिए एक समुदाय के रूप में विलाप करना न केवल बुराई को दूर भगाने और सच बोलने के रूप में कार्य करता है, बल्कि पीड़ित लोगों के लिए वकालत भी करता है। यह उपचार की ओर रास्ता भी खोलता है। और इसलिए यह यहाँ एक बहुत ही शक्तिशाली उदाहरण है।

और उन्होंने अपनी पुस्तक ईविल एंड जस्टिस ऑफ गॉड में दक्षिण अफ्रीका में सत्य और सुलह के लिए हुए इस आयोग के बारे में निम्नलिखित तरीके से बात की है। तो वह यही कहते हैं। उनका कहना है, हालांकि अधिकांश पश्चिमी पत्रकारों ने इस पर बहुत कम ध्यान दिया है, लेकिन श्वेत सुरक्षा बलों और काले गुरिल्लाओं द्वारा सार्वजनिक रूप से अपने हिंसक अपराधों को कबूल करना अपने आप में एक भयानक घटना है।

और उन स्वीकारोक्ति के साथ, प्रताड़ित और मारे गए लोगों के परिवार पहली बार सच्चे शोक की प्रक्रिया शुरू करने में सक्षम हुए हैं और इस तरह कम से कम माफ़ करने में सक्षम होने की संभावना पर विचार करने में सक्षम हुए हैं और इसलिए अपने जीवन के धागे को खुद पर हावी होने और क्रोध और घृणा को जारी रखने के बजाय उठा सकते हैं। और इसलिए यहाँ एक साथ आना, एक साथ विलाप करना वास्तव में आशा लाता है, वास्तव में यहाँ यह पहचानना कि हम वास्तव में इन सभी चीज़ों में फंसने के बजाय आगे बढ़ सकते हैं, आप जानते हैं, उस अर्थ में जो बुराई और अन्याय हुआ है। इसलिए, व्यक्तियों और समुदायों को हमारी दुनिया की टूटन को

स्वीकार करने के लिए यहाँ एक साथ खड़ा होना चाहिए और ताकि हम उपचार की दिशा में कदम उठा सकें और बदलाव ला सकें।

और इसलिए यहाँ एक समुदाय को आवाज़ देना उस तरह का बदलाव लाने के लिए है जो उस तरह से दर्द से पीड़ित लोगों के लिए है। फिर यह हमें दूसरे उद्देश्य की ओर ले जाता है जो मुझे लगता है कि ईश्वर से जुड़ने का एक रास्ता प्रदान करना है। और इसलिए यहाँ, न केवल व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से हमारे दर्द को आवाज़ देना है, बल्कि हमें ईश्वर से जुड़ने का एक रास्ता भी प्रदान करना है।

तो यहाँ, दुख, दर्द और क्रोध और अन्य भावनाएँ हमें पीछे हटने पर मजबूर कर सकती हैं। और इसलिए हमने इस बारे में कई बार बात की है जब हम दर्द से गुज़र रहे होते हैं। एक चीज़ जो हम करना चाहते हैं वह है संलग्न होने के बजाय अलग हो जाना।

और इसलिए यहाँ यह बहुत सूक्ष्म हो सकता है। कभी-कभी यह, आप जानते हैं, डूम स्कॉलिंग या, आप जानते हैं, नेटफ्लिक्स को देखने या सिर्फ़ अलग-अलग चीज़ें करने जैसा भी हो सकता है क्योंकि हम उन मुद्दों में से कुछ का सामना नहीं करना चाहते हैं जिनसे हम निपट रहे हैं। और इसलिए यह वास्तव में उदासीनता का परिणाम हो सकता है, आप जानते हैं।

इसलिए जब हम ये काम कर रहे हैं, तो आगे बढ़ने की बजाय, हम एक तरह से अलग-थलग और अधिक उदासीन हो जाना। और इसलिए, फिर से, यह वह जगह है जहाँ जेम्स ग्राँस ने इस अध्ययन में पाया कि जब हम अपनी भावनाओं को दबाते हैं, तो यह हमारे रिश्तों को बंद कर देता है और व्यक्ति को और भी अलग-थलग कर देता है। इसलिए, जो लोग अपनी भावनाओं को दबाते हैं वे अक्सर अपनी भावनाओं को साझा करने में अनिच्छुक होते हैं और आमतौर पर करीबी रिश्तों से बचते हैं।

और इसलिए यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है। इसलिए, अपने भीतर यह पहचानना कि क्या आप बंद हो रहे हैं? आप जानते हैं, क्या आप अपने इंटरनेट फोन या फोन पर ज़्यादा समय बिता रहे हैं या स्क्रॉल कर रहे हैं या बिज वाँचिंग कर रहे हैं और लोगों से अलग-थलग पड़ रहे हैं, बजाय इसके कि आप वास्तव में ईश्वर से या इस तरह से दूसरों से जुड़ें? और इसलिए बाइबिल का विलाप हमारे लिए महत्वपूर्ण है। इसलिए, हमारे पास भजन संहिता की पुस्तक में विलाप के इतने सारे उदाहरण हैं कि भजनकार यहाँ अपनी भावनाओं के साथ ईश्वर को पुकारने से डरते नहीं हैं।

और हम देखते हैं कि भजनकार कई तरह की भावनाएँ लाना चाहता है। इसलिए इससे ज़्यादा उदासीन तरीके से निपटने के बजाय, वे वास्तव में ईश्वर से जुड़ना, चाहे वह पछतावे या क्रोध या अवसाद के माध्यम से हो। वे वास्तव में उनकी प्रार्थनाओं में क्या दर्शाया गया है और हम इसे कैसे देख सकते हैं।

तो, कुछ लोग वास्तव में तर्क देते हैं, आप जानते हैं, अगर भगवान हमें इतनी अच्छी तरह से जानते हैं, तो आपको पता है, हमें विलाप करने की क्या ज़रूरत है? आप जानते हैं, अगर वह हमारे बारे में सब कुछ जानता है, तो हमें यह सब क्यों व्यक्त करना है? और इसलिए मुझे लगता है कि यह विलाप के बारे में एक गलतफहमी है। तो विलाप सिर्फ़ भगवान के सामने अपनी

भावनाओं और संवेदनाओं को व्यक्त करने से कहीं ज़्यादा है। यह विश्वास का एक ऐसा कार्य है जहाँ हम भगवान से दूर जाने के बजाय उनकी ओर मुड़ते हैं।

और इसलिए, विलाप यह दर्शाता है कि हम खुद को ईश्वर से दूर नहीं कर रहे हैं, जो अक्सर यह प्रवृत्ति हो सकती है जब हम कठिन समय से गुज़र रहे होते हैं। और इसलिए यह महत्वपूर्ण है। तो, आप जानते हैं, यहाँ विलाप करने का मतलब यह है कि हम ईश्वर से जुड़ रहे हैं और हम अपने दर्द के बीच भी ईश्वर से व्यवहार कर रहे हैं और ईश्वर से व्यवहार करना चाहते हैं।

के बीच में भी ईश्वर को शामिल करने का एक रास्ता प्रदान कर रहे हैं। और इस तरह यह हमें ईश्वर से दूर जाने के बजाय उनकी ओर मुड़ने में मदद करता है। और इस तरह आस्था का यह कार्य ईश्वर को हमारे संघर्ष में आमंत्रित कर रहा है।

और इसलिए यहाँ, चाहे वह दर्द हो या संदेह, यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा हम शास्त्रों में भी देखते हैं। यहाँ तक कि यहाँ अय्यूब का उदाहरण भी है। तो, वह अपने दर्द को पहचान रहा है और अपनी पत्नी की बातों पर ध्यान देने के बजाय, आप जानते हैं, भगवान को कोसता है और मर जाता है।

वह वास्तव में अपने संकट और अपनी भावनाओं और यहाँ और भगवान के सामने अपनी कमज़ोरी में भगवान से जुड़ता है। इसलिए भले ही हम पापी हैं, हम भगवान से संपर्क कर सकते हैं। और इसलिए यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि हम इसे भगवान से जुड़ने का एक रास्ता देने के बारे में सोचते हैं।

इसलिए हम यहाँ वैसे ही आ सकते हैं जैसे हम हैं। इसलिए भले ही हम पापी हैं, हमें यहाँ कोई मुखौटा लगाने या दिखावा करने या किसी भी तरह से आने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन हम वास्तव में बहुत ही कमज़ोर तरीके से परमेश्वर के पास आ सकते हैं, अपनी कमज़ोरियों को पहचान सकते हैं, अपनी ज़रूरतों को उसके सामने रख सकते हैं।

और यीशु, जो हमारे महायाजक हैं, हर तरह से परीक्षा में आए हैं, ~~kind of~~ हमें आश्चस्त करते हैं और आश्चस्त करते हैं कि हम आ सकते हैं और हमें परमेश्वर के सामने आने का निमंत्रण है और हमें इस तरह से अकेले अपना बोझ नहीं उठाना है। और इसलिए हमें परमेश्वर से जुड़ने से डरने की ज़रूरत नहीं है। और इसलिए यहाँ, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि विलाप विश्वास का एक कार्य है क्योंकि हम परमेश्वर के पास जा रहे हैं, यह विश्वास करते हुए कि वह उस स्थिति में बदलाव ला सकता है जिसका हम सामना कर रहे हैं।

इसलिए, यह भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि हम ईश्वर से जुड़ रहे हैं, यहाँ ईश्वर से जुड़ने का एक तरीका है। हम इन भावनाओं को व्यक्त कर रहे हैं कि उसके साथ कौन है, लेकिन न केवल वह हमें इस प्रक्रिया से गुज़ारता है, बल्कि वह वास्तव में चीज़ों को सही कर सकता है। तो यह सिर्फ़ एक तरह की अभिव्यक्ति से कहीं ज़्यादा है, आप जानते हैं, यहाँ यह एहसास करना कि विलाप इस तथ्य पर आधारित है कि ईश्वर वही है जो वह है, कि वह शक्तिशाली है, कि वह प्रेमपूर्ण है, कि वह बस हम इस तरह से ईश्वर से जुड़ रहे हैं और महसूस कर रहे हैं कि वह कौन है जब हम उसके सामने विलाप करते हैं।

इसलिए क्योंकि वह वही है जो वह है, हम इस तरह से उसके पास जा सकते हैं। इसलिए, विलाप के माध्यम से विश्वास का यह पहलू विशेष रूप से बुराई और अन्याय की स्थितियों में ~~and just,~~ injustice, उजागर होता है। और इसलिए यहाँ यह पहचानना कि जब हम ईश्वर से जुड़ रहे हैं, हम किसके साथ जुड़ रहे हैं, खासकर जब हम शक्तिहीन महसूस करते हैं, खासकर जब हम बुराई और अन्याय की तरह महसूस करते हैं, कि हम इसे करने में शक्तिहीन हैं, कि ईश्वर वास्तव में सक्षम है।

और इसलिए बाइबिल का विलाप परमेश्वर पर इतना भरोसा करता है कि वह रो सके। इसलिए, हम न केवल खुद को सुन्न कर रहे हैं, बल्कि हम वास्तव में यह एहसास होना कि कुछ किया जा सकता है, और जो व्यक्ति ऐसा कर सकता है वह ईश्वर है। और इसलिए हम उसे इस तरह से संलग्न करने जा रहे हैं।

और इसलिए, आप जानते हैं, मेरी किताब में, मैं कहता हूँ कि कभी-कभी विलाप ही उन भयावह घटनाओं के लिए एकमात्र और सबसे उचित प्रतिक्रिया होती है जो घटित होती हैं क्योंकि कुछ बुराईयाँ इतनी भयावह होती हैं कि केवल ईश्वर की असीम अच्छाई और शक्ति ही उन्हें अंतिम रूप से परास्त कर सकती है। विलाप की पुकार बदलाव की पुकार है। यह उस बुराई और दर्द का नाम लेना है जो इस दुनिया में हमारे साथ हुई है।

यह ईश्वर के साथ विश्वास के साथ आशापूर्ण और ईमानदार जुड़ाव है। और इसलिए यहाँ recognizing who God is, that he is able, we recognize who God is and that he is able to do so। इसलिए इस दुनिया में हम जिन भयावहताओं, बुराईयों और अन्याय का सामना करते हैं, उनके ~~that~~ बीच भी हमें खुद को सुन्न नहीं करना है या आँखें मूंदकर नहीं बैठना है, हम वास्तव में इस तरह से ईश्वर से जुड़ सकते हैं।

इसलिए जब हम इस तरह से उससे जुड़ते हैं, तो हम गहरी संगति का अनुभव करते हैं जो उसकी अंतिम योजना में भाग लेती है। इसलिए यहाँ जब हम प्रार्थना कर रहे हैं, जब हम विलाप में परमेश्वर से जुड़ रहे हैं, तो हम प्रभु की प्रार्थना के साथ प्रार्थना कर सकते हैं, तेरा राज्य आए और तेरी इच्छा पृथ्वी पर भी पूरी हो जैसे स्वर्ग में होती है। इसलिए, हम परमेश्वर से गहराई से जुड़ रहे हैं क्योंकि हम यहाँ कुछ चीजों और अन्याय के बारे में सोचते हैं जो हमारी दुनिया को भी परेशान कर रहे हैं।

तो फिर यहाँ यह हमें तीसरी बात की ओर ले जाता है कि विलाप करें, इसका एक उद्देश्य हमें बड़ी आशा की ओर ले जाना है। और इसलिए, विलाप का लक्ष्य हमारे दर्द में डूबना नहीं है। तो यहाँ यह आत्मनिरीक्षण के बारे में नहीं है।

इसका मतलब यह नहीं है कि हम इस बारे में सोचें कि दुनिया कितनी दुखी है और हम अवसाद में डूबते जा रहे हैं। बल्कि इसके विपरीत, वास्तव में, इसका उद्देश्य हमें बड़ी आशा की ओर ले जाना है। और इसलिए जब हम विलाप करते हैं, तो हम खुद को ईश्वर की प्रतिक्रिया और कार्य की प्रतीक्षा और प्रत्याशा की मुद्रा में रखते हैं।

इसलिए हम अपनी भावनाओं को स्वीकार कर रहे हैं और भगवान से हस्तक्षेप करने और कार्रवाई करने के लिए कह रहे हैं। और इसलिए यह यहाँ महत्वपूर्ण है क्योंकि हम इसके बारे में सोचते हैं, खासकर जब हम बाइबिल के विलाप के बारे में सोचते हैं। और कई बार जो चीजें हमें दर्द और दुख देती हैं, वे ऐसी चीजें होती हैं जिन्हें हम खुद नहीं कर सकते।

आप जानते हैं, हमारे पास इन परिस्थितियों से निपटने की ताकत नहीं है। और इसलिए, हमारा दुख दूसरे लोगों के कामों, हमारे अपने पापों, उन चीजों से उत्पन्न हो सकता है जो हमारे नियंत्रण से बाहर हैं। और यही कारण है कि हमें यहाँ विलाप करते हुए परमेश्वर के सामने आना पड़ता है, क्योंकि यह इस अर्थ में हमारे परे है।

और इसलिए, यह सुनना आश्चर्यजनक नहीं है कि, आप जानते हैं, उन लोगों की अनगिनत गवाही जो बहुत पीड़ित हैं, उन्होंने कहा कि उन्होंने पीड़ा के समय में अपनी सबसे गहरी खुशी पाई। अधिकांश के लिए, ये ऐसे क्षण थे जब उन्होंने खुद को ईश्वर के सबसे करीब महसूस किया। और इसलिए यहाँ, जैसा कि, आप जानते हैं, जैसा कि मैंने विलाप पर पढ़ाया है और उस पर विभिन्न लोगों से सुना है, आप जानते हैं, कभी-कभी यह सबसे गहरे दर्द की तरह होता है।

और खुद के लिए भी, जब मैंने यह अनुभव किया है, जब आप सबसे गहरे दर्द का अनुभव करते हैं, तो आप जानते हैं, जब आप उसे व्यक्त करते हैं तो आप भगवान के साथ निकटता की एक वास्तविक भावना महसूस कर सकते हैं। और इसलिए कभी-कभी मैंने लोगों से बात की है, आप जानते हैं, बार-बार, how they actually after, you know, kind of who, after, you know, कुछ राहत पाने वाले लोग वास्तव में उस अंतरंगता को याद करते हैं जो उन्होंने उस समय भगवान के साथ महसूस की थी। जब मैं एक बार पढ़ा रहा था, तो मेरी कक्षा में एक छात्र था जिसने of an illness that resulted in like isolation that was an illness that resulted in isolation दर्द और कुछ अन्य चीजों के कारण साझा किया था जो इस बीमारी से निपटने के लिए साइड इश्यू के मामले में शर्मनाक थे।

किसी तरह से अलग-थलग थे और वे इससे निपटने की कोशिश कर रहे थे। इसलिए, उन्होंने भगवान के साथ अकेले बहुत समय बिताया। और जब वह मेरे साथ अपनी यात्रा साझा कर रही थी, तो उसने इस अनुभव के माध्यम से भगवान के साथ मिली गहरी खुशी के बारे में बताया।

तो यह है जैसे- जैसे वह अपने दर्द और अकेलेपन में आगे बढ़ती गई, उसे वास्तव में गहरी खुशी मिली। और इसलिए जिस तरह से मैं इसे अपने लिए तुलना करता हूँ, मुझे लगता है, आप जानते हैं, जब, आप जानते हैं, आपको लगता है कि आप चट्टान के नीचे पहुँच गए हैं, तो आप वास्तव में चट्टान पर खड़े होकर, जो कि प्रभु है। और इसलिए यहाँ पर, आप जानते हैं, आशा को पा रहे हैं।

और इस तरह ईश्वर की उपस्थिति वास्तविक हो जाती है। और यह उसके दिल में भरी आत्मीयता और खुशी के साथ आई। और इसलिए जब हम विलाप करते हैं और इन परिस्थितियों से गुजरते हैं, तो हम ईश्वर से जुड़ते हैं और इस तरह से हम गहरी आशा भी पाते हैं।

और इसलिए, हम भी अपने दर्द से निपटने के लिए उस पर दबाव डालते हैं। तो, यह प्रतीक्षा निष्क्रिय नहीं है। इसलिए, जब हम प्रतीक्षा कर रहे होते हैं, तो कभी-कभी हम प्रतीक्षा को निष्क्रिय मानते हैं, लेकिन यह है वास्तव में यह एक प्रतीक्षा और उम्मीद है।

इसलिए परमेश्वर के चरित्र के आधार पर, ~~on who he is, who he is, and~~ उसने जो किया है, वह दुख ~~kind of, you know, it's a hopeful kind of a, kind of, you know, it's a hopeful kind of~~ के बीच भी आशावान है। और इसलिए यहाँ प्रतीक्षा कर रहा है। और इसलिए निष्क्रिय त्याग या पेट की ओर देखने के बजाय, जब हम विलाप करते हैं, तो हम परमेश्वर के चरित्र और उसके पिछले कार्य में विश्वास प्रदर्शित कर रहे हैं।

तो, यह हमें अपने आप को और अपनी परिस्थितियों को उसके सामने समर्पित करने की एक आशावादी इच्छा की ओर ले जाता है। और इसलिए यह एक तरह से ऐसा है, जहाँ आप जानते हैं, जब हम आगे बढ़ते हैं, तो हम यह पहचानते हैं कि परमेश्वर ने अतीत में क्या किया है, क्योंकि हम यहाँ प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसलिए हम एक सक्रिय अपेक्षा के साथ जीते हैं, न कि निराशा के साथ।

तो यह है हमारी परिस्थिति में अधिक निराशावाद लाने के बजाय हमें अधिक आशा प्रदान करना। और इसलिए, जब हम इन बातों पर विलाप कर रहे होते हैं, तो आप जानते हैं, यह हमें अपने जीवन में और हमारे आस-पास के लोगों के जीवन में परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने की इच्छा को नवीनीकृत करने की ओर ले जाता है। और इसलिए, एक तरह का त्याग और समर्पण जो अधिक आशा लाता है जब हम इस तरह से परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और उसका इंतज़ार करते हैं।

हेनरी नोवेन लिखते हैं कि आशा देश में शांति, दुनिया में न्याय और व्यापार में सफलता पर निर्भर नहीं है। आशा अनुत्तरित प्रश्नों, अनुत्तरित और अज्ञात भविष्य, अज्ञात को छोड़ने के लिए तैयार है। आशा आपको ईश्वर के मार्गदर्शक हाथ को देखने देती है, न केवल कोमल और सुखद क्षणों में, बल्कि निराशा और अंधेरे की छाया में भी।

और इसलिए, आप जानते हैं, यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है, भले ही हम इसके बारे में सोचें, जैसे कि हम आशा के बारे में क्या सोचते हैं। क्या यह वास्तव में हमारी परिस्थितियों में है या यह वास्तव में आत्मसमर्पण की भावना है और इसे भगवान के सामने लाना है? और इसलिए, जैसा कि मैं अपनी पुस्तक में विलाप के इन उद्देश्यों के बारे में सोचता हूँ, मैं वास्तव में, जैसा कि मैंने कहा, विलाप के विभिन्न तरीकों और विभिन्न उदाहरणों से गुजरता हूँ जो विभिन्न स्थितियों से निपटते हैं। इसलिए, ऐसा करने में, मैं यह स्पष्ट करना चाहता था कि विलाप केवल एक सपाट, एक आयामी तरह की समझ नहीं है जब हम अपने जीवन में स्थितियों के बारे में सोचते हैं।

यह सिर्फ दुख या दर्द के बारे में नहीं है। लेकिन असल में, आप जानते हैं, अलग-अलग तरीके हैं जिनसे हम इसे अकेलेपन से निपटने, क्रोध से निपटने, पाप से निपटने में लागू होते हुए देख सकते हैं। तो ये कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें बाद के अध्यायों में संबोधित किया गया है और व्यावहारिक उदाहरणों की तरह बताया गया है।

और इसलिए, इस समय, मैं वास्तव में एक विशेष उदाहरण के माध्यम से चलना चाहता हूँ जो मेरी पुस्तक में है, जो विलाप ~~and loneliness~~, loneliness, और परित्याग है। और इसलिए, भजन संहिता में एक उदाहरण के माध्यम से चलना जो इस तरह से निपटता है और विभिन्न तत्वों को देखता है, यह देखता है कि हम उन तत्वों को कैसे पहचान सकते हैं, यह देखते हुए कि वे वास्तव में हमारी मदद कैसे कर सकते हैं और हमारी प्रार्थनाओं में भी शिक्षाप्रद हो सकते हैं। एक चीज जो मैं बहुत बार करता हूँ, जब मैं इस पर पढ़ा रहा होता हूँ, तो मैं वास्तव में लोगों से उनके अपने विलाप लिखवाता हूँ।

और इसलिए, आप जानते हैं, इन तरह के व्यक्तिगत तत्वों को पहचानते हुए, जो मौजूद हैं, वे अपने स्वयं के विलाप लिखते हैं और वे इसे कैसे देखते हैं। मैं आपके साथ इस विशेष पर चलाऊंगा। आप इसे लिख सकते हैं।

कभी-कभी, आप जानते हैं, मैंने यहां तक कि, आप जानते हैं, ऐसे छात्र भी थे जो अगर अच्छे लेखक नहीं होते, तो वास्तव में उन विशिष्ट तत्वों को बाहर निकालें और, आप जानते हैं, उस तरह से उसे अभिव्यक्त करें और उस अर्थ में उसे साझा करें। और इसलिए इन विलापों या इन स्थितियों या इन भावनाओं से एक अलग तरीके से निपटना। और कई बार मुझे लगा कि यह बहुत शक्तिशाली था यह वह स्थान था जहां लोग वास्तव में ये विलाप लिखते थे और समुदाय के अन्य लोगों के साथ इसे साझा करते थे।

और फिर एक दूसरे के लिए प्रार्थना करने में सक्षम होना। और यह देखना बहुत शक्तिशाली रहा है। तो, यह ऐसा है जैसे वे साझा करते हैं, क्योंकि कभी-कभी यह आप जानते हैं, कुछ चीजें जिनसे हम गुजर रहे हैं, उन्हें दूसरों के साथ व्यक्त करना बहुत कठिन है।

और इसलिए यहाँ ~~allowing yourself to be vulnerable, to share and then also to cover one another in prayer as well, allowing yourself to be vulnerable, to share, and then also to cover one another in prayer as well~~, उसके बाद साझाकरण हुआ है। और इसलिए यदि यह कुछ ऐसा है जो आपके लिए उत्साहजनक है, तो शायद जब आप इनके तत्वों से गुजर रहे हों, उनके बारे में सोच रहे हों, आप जानते हैं, उन तरीकों के बारे में सोच रहे हों जिनसे आप अपने खुद के विलाप भी लिख सकें, इसे किसी करीबी के साथ साझा कर सकें और उस तरह से एक दूसरे के लिए प्रार्थना कर सकें। तो यहाँ, जैसा कि मैंने कहा, मेरी पुस्तक के दूसरे भाग में, मैं कुछ विशिष्टताओं का पता लगाता हूँ, इसलिए मुख्य रूप से अध्याय पाँच से 10 तक।

तो, मैं यहाँ जो देख रहा हूँ, वह यह है कि शास्त्र हमें, आप जानते हैं, विभिन्न प्रकार के विलापों के उदाहरण प्रदान करता है। और उनमें से बहुत से, आप जानते हैं, प्रार्थनाओं और भजनकार का उल्लेख करते हैं। यहाँ तक कि विलाप की पुस्तक या यहाँ विभिन्न चीजों में भी मैं भविष्यवक्ताओं के बारे में बात करता हूँ।

तो, विषय कुछ प्रासंगिक परिस्थितियों को छूते हैं जिनके लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। तो, यह थोड़ा और अधिक है, आप जानते हैं, हम शास्त्र को छू रहे हैं, लेकिन हम इस तरह से कुछ व्यावहारिक मार्गदर्शन भी देख रहे हैं। और इसलिए यह बातचीत

शुरू करने के लिए है ताकि दिखाया जा सके कि विलाप गहराई से निहित है, एक बाइबिल अवधारणा है।

और इसलिए यहाँ यह कुछ ऐसा है, भले ही हम चर्च में उतना नहीं सुनते हैं, कि विलाप बाइबल में एक अवधारणा के रूप में बहुत गहराई से निहित है, और हम वास्तव में इस तरह से उससे सीख सकते हैं। और इसलिए इस पाठ में, मैं केवल विलाप, अकेलेपन और परित्याग के उदाहरण के माध्यम से चलना चाहता हूँ, जैसा कि हम यहाँ देख सकते हैं। तो यहाँ मैं यहाँ से शुरू करना चाहता हूँ कि हार्वर्ड के 2021 के एक अध्ययन में, यह रिपोर्ट करता है कि एक तिहाई से अधिक अमेरिकी, यानी 36 प्रतिशत, गंभीर अकेलापन महसूस करते हैं, जिसका अर्थ है कि वे अक्सर अकेलापन महसूस करते हैं या लगभग हर समय या हर समय अकेलापन महसूस करते हैं।

तो यह बहुत बड़ी बात है। 36 प्रतिशत लोग ऐसा महसूस करते हैं। इस अध्ययन से यह भी पता चलता है कि 37 प्रतिशत अतिरिक्त उत्तरदाताओं ने कभी-कभी अकेलापन महसूस करने की बात कही है।

तो, हम 75 प्रतिशत लोगों के बारे में बात कर रहे हैं जो या तो इसे हर समय महसूस करते हैं या कभी-कभी इस तरह से अकेलेपन की भावना महसूस करते हैं। और इसलिए यहाँ, अकेलापन सभी प्रमुख जनसांख्यिकीय समूहों में व्याप्त था। इसलिए यहाँ नस्ल या जातीयता, या जहाँ वे रहते हैं, के आधार पर अकेलेपन की दर के संदर्भ में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। ~~or gender, or levels of education, income, religion, or gender, or levels of education, income, religion,~~

और इसलिए यहाँ, आप जानते हैं, इस विलाप और अकेलेपन के बारे में सोचते हुए, अकेलापन एक ऐसी चीज़ है जिसका हम सभी कभी न कभी सामना करते हैं, अगर हमेशा नहीं तो कुछ ऐसा जो हम यहाँ महसूस करते हैं। और इसलिए, अगर हम लंबे समय तक जीवित रहते हैं, तो हममें से ज्यादातर लोगों को अपने जीवन में भी अकेलेपन के कम से कम एक या ज्यादा मौसमों का अनुभव होगा। इसलिए, शास्त्र हमें यह भी बताता है कि यीशु ने इसका अनुभव तब किया जब उसके शिष्य, जिन पर उसने पूरे तीन साल तक अपना जीवन लगाया, उसकी सबसे बड़ी ज़रूरत के समय में भाग गए और उसे छोड़ दिया।

और इसलिए यहाँ आप यहाँ क्रूस पर देख सकते हैं कि उसे उसके अपने शिष्यों ने यहाँ छोड़ दिया था। उसे यहाँ डाला गया है। उसे क्रूस की ओर जाने वाले मार्ग का सामना अकेले ही करने के लिए छोड़ दिया गया है।

और इसलिए यहाँ यीशु के पास भी इस तरह के अनुभव थे। तो ~~how can we walk through seasons of loneliness with the Lord and how can we,~~ how can we walk through seasons of loneliness with the Lord, and how can the विलाप की प्रक्रिया हमारे लिए शिक्षाप्रद होगी जब हम इसके बारे में सोचते हैं? और इसलिए हम यहाँ इसी तरह की बात करना चाहते हैं। इसलिए यहाँ मैं भजन 42 और 43 को देखना चाहता हूँ जब हम इसके बारे में सोचते हैं।

तो, जबकि कई, आप जानते हैं, व्यक्तिगत विलाप भजन हैं जो अकेलेपन और संघर्ष के बारे में बोलते हैं, मुझे ये दो विशेष रूप से सहायक लगे। और इसलिए यहाँ उन्हें आमतौर पर इस तरह से एक इकाई के रूप में देखा जाता है क्योंकि वे बहुत सारे समान विषयों को साझा करते हैं और दोनों भजन इस प्रतिध्वनि को दोहराते हैं जो लगभग शब्दशः है। तो, आप इसे यहाँ उन छंदों में पा सकते हैं।

और कई प्राचीन पांडुलिपियाँ वास्तव में इन दो भजनों को एक के रूप में भी प्रस्तुत करती हैं। इसलिए यहाँ, भले ही हमारी बाइबल में दो सूचीबद्ध हैं, हम उन्हें यहाँ एक इकाई के रूप में देख सकते हैं। और इसलिए, दोनों व्यक्तिगत विलाप के भजन हैं जो अकेलेपन और परित्याग की भावनाओं के संघर्ष को आवाज़ देते हैं।

और इसलिए न केवल दूसरों से, बल्कि परमेश्वर से भी। और इसलिए अक्सर अकेलेपन के साथ हमारे संघर्ष में परमेश्वर से दूरी शामिल होती है और हम आश्चर्य करते हैं कि क्या वह हमें देखता भी है। और इसलिए, आप जानते हैं, न केवल अन्य लोगों से अकेलेपन के बारे में सोचना, बल्कि स्वयं परमेश्वर से भी अकेलेपन के बारे में सोचना और देखना, आप जानते हैं, क्या हम इस पूरी स्थिति में उस अर्थ में अकेले हैं? और इसलिए, यहाँ ऐसे समय में, हम पाते हैं कि भजनकार, हमारे पास यहाँ प्रश्न हैं।

भजनकार ने ईश्वर की उपस्थिति की निकटता के अस्तित्व के प्रश्न को उठाया है। और इसलिए हम यहाँ उसे इस प्रश्न को उठाते हुए देखते हैं, आप जानते हैं, ईश्वर कहाँ है? इन सबके बीच। और कुछ टिप्पणीकारों का मानना है कि ये दोनों भजन यरूशलेम के विनाश और यहूदा के निर्वासन के संदर्भ में लिखे गए होंगे।

लेकिन हम इसकी पृष्ठभूमि जानने के लिए पर्याप्त नहीं जानते हैं। लेकिन हम जानते हैं कि भजनकार केवल परमेश्वर से त्याग की भावनाओं से त्याग से जूझ रहा है और यह साबित करने के लिए पर्याप्त विवरण प्रदान नहीं कर रहा है कि यह क्या था। तो, यह स्पष्ट है कि यह अकेलेपन, त्याग से निपट रहा है।

भजनकार की तरह की स्थिति के बारे में विशेष जानकारी की तलाश करने के बजाय, सामान्य प्रकृति पर अधिक प्रकाश डाला गया। इसलिए, यह वह जगह है जहाँ यह किसी भी परिस्थिति में हमारे लिए अधिक लागू होता है। तो स्पष्ट रूप से उसके दिल के भीतर एक संघर्ष है कि वह परमेश्वर के सामने आना चाहता है, लेकिन उसकी वर्तमान स्थिति में भी।

और इसलिए यहाँ हम यहाँ प्रासंगिकता पा सकते हैं, यहाँ तक कि, आप जानते हैं, यह सोचने की कोशिश करते हुए कि इसके लिए पृष्ठभूमि क्या है। तो यहाँ NIV अनुवाद से दो हैं। मैं इसे अभी नहीं पढ़ूँगा, लेकिन जैसे ही मैं अलग-अलग तत्वों को इंगित करूँगा, मैं इन दो भजनों से कुछ छंद भी पढ़ूँगा।

तो, भजन 42 और 43, अगर आप खुद भी इसे देखना चाहते हैं, तो आप इसे अपनी बाइबल से निकाल सकते हैं। लेकिन मैं यहाँ सिर्फ़ उन पाँच तत्वों के बारे में बताना चाहता हूँ जो विलाप की

विशेषताएँ हैं। और इसलिए, मैंने फिर से कहा कि सभी तत्व हर विलाप में मौजूद नहीं होंगे और हमेशा इसी क्रम में नहीं होंगे।

लेकिन यहाँ हम देखेंगे कि इन दो भजनों में क्या मौजूद है, वे कैसे भिन्न हैं, वे कैसे स्थित हैं, उन्हें इन भजनों में कैसे प्रस्तुत किया गया है। तो संबोधन या आह्वान, विलाप, याचिका या शिकायत, प्रेरणाएँ, विश्वास की स्वीकारोक्ति, सुने जाने का आश्वासन और स्तुति की शपथ। और इस तरह आइये हम सब मिलकर इन पर विचार करें।

तो यहाँ जब हम संबोधन या आह्वान के बारे में सोचते हैं। और इसलिए भजनकार परमेश्वर को संबोधित करके शुरू करता है, यहोवा के बजाय परमेश्वर, एलोहिम को पुकारता है। तो, यह भजन संहिता की पुस्तक के दूसरे भाग या भजन संहिता की विशेषता है।

इसलिए, भजन संहिता में ऐसे और भी भजन हैं जिनमें परमेश्वर को संबोधित करने के लिए एलोहिम शब्द का इस्तेमाल किया गया है। और इसलिए यहाँ भजन संहिता की पुस्तक में पाई जाने वाली पाँच पुस्तकों के बारे में सोचें, यह पुस्तक दो में जो हम देखते हैं, उसके संदर्भ में विशिष्ट है। और जो बात इस बारे में सबसे अलग है, वह है ईश्वर के साथ रहने की इच्छा को व्यक्त करने के लिए उपमा की काव्यात्मक युक्ति की कल्पना का उपयोग।

तो, यह भजनकार की ईश्वर के लिए इच्छा की तुलना प्यास से करता है। और इसलिए अधिक विशेष रूप से, उसकी प्यास उस हिरण की प्यास से है जो बहती हुई नदी के लिए तड़पता है। तो वापस आते हुए, हम यहाँ उस श्लोक पर एक नज़र डालेंगे।

तो, जहाँ यह कहा गया है, जैसे हिरण जल की धाराओं के लिए हाँफता है, वैसे ही मेरी आत्मा आपके लिए हाँफती है, मेरे परमेश्वर। और इसलिए, मेरी आत्मा परमेश्वर, जीवित परमेश्वर के लिए प्यासी है, मैं कहाँ जा सकता हूँ और परमेश्वर से मिल सकता हूँ? और इसलिए यहाँ इस तरह से आना और परमेश्वर को संबोधित करना और इस तरह से उसे संबोधित करना। और इसलिए यहाँ दिलचस्प बात यह है कि कई बार हम इस कल्पना के बारे में इस तरह सोचते हैं, जैसे कि यह हिरण चुपचाप धारा के बीच में पानी पी रहा हो।

और यह बहुत शांतिपूर्ण बात है। लेकिन असल में, हकीकत में, यह हताशा की तस्वीर है। यह एक ऐसी तस्वीर है जो बहुत ज़्यादा है यह नहीं है यह है वास्तव में बहुत बदसूरत।

यह उतना शांत और सुंदर नहीं है जितना हम इसके बारे में सोचते हैं। ऐसा नहीं है कि हिरण चुपचाप और शालीनता से पानी की तलाश कर रहा है। दरअसल के बारे में एक गर्म दिन में हाँफता हुआ हिरण ठंडक पाने के लिए अपनी जीभ बाहर निकाले हुए है।

तो यह है जैसे कि, आप जानते हैं, मनुष्यों के विपरीत जो पसीना बहाते हैं, वे अधिक गरम होते हैं। इसलिए, एक हिरण को शरीर की गर्मी बाहर निकालने के लिए हाँफना पड़ता है। इसलिए, यदि आपको कभी अधिक गरम होने के लक्षण महसूस हुए हैं, तो आप पहचानते हैं कि इसके साथ थकावट, बेहोशी, थकान और निर्जलीकरण भी है।

इसलिए चरम मामलों में, इसके परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण अंग काम करना बंद कर सकते हैं, जिससे मृत्यु भी हो सकती है। इसका एक तरह की हताशा की जगह। यह सिर्फ शांत, निर्मल नहीं है, आप जानते हैं, मेरा दिल भगवान के लिए तड़पता है, आप जानते हैं, मेरी आत्मा भगवान के लिए तड़पती है।

इसका दरअसल यहाँ, हताशा, जीवन और मृत्यु की स्थिति है। आप जानते हैं, यह व्यक्ति, आप जानते हैं, इस ऋण को महसूस कर रहा है। यह हिरण, आप जानते हैं, अत्यधिक गर्मी, थकावट, बेहोशी, थकान से जूझ रहा है।

तो, भजनकार दिखा रहा है कि कैसे वह निराशा के समय में परमेश्वर की ओर मुड़ना चाहता है। तो, यह एक तरह से यह चित्र चित्रित कर रहा है कि यह सिर्फ एक शांत समय नहीं है। यह उसके लिए एक हताश समय है।

इसलिए, वह जानता है कि परमेश्वर ही एकमात्र है जो उसकी मदद कर सकता है। और जैसा कि हम भजन में बाद में देखते हैं, यह एक हताश कर देने वाली पुकार है जो उसकी आत्मा में अकेलेपन, दर्द, परित्याग, कमजोरी और निराशा को व्यक्त करती है। और इसलिए यहाँ यह इस चित्र के साथ शुरू होता है जिसे हम यहाँ पा सकते हैं।

और फिर यह विलाप, प्रार्थना और शिकायत में बदल जाता है। और इसलिए, ~~se~~ मैं जो बात उजागर करना चाहता हूँ वह यह है कि यह भजन वास्तव में निराशा और आशा के बीच इस परिवर्तन को दर्शाता है। इसलिए, यह सिर्फ ऊपर की ओर बढ़ने वाला प्रक्षेप पथ नहीं है।

तो यह विलाप के बारे में कुछ है। यह कभी-कभी ऐसा नहीं होता है कि, आप जानते हैं, यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो बस ऊपर और ऊपर जाने वाली है और आप ठीक होने जा रहे हैं। कभी-कभी यह प्रदर्शित करने वाला होता है कि कहाँ पर परिवर्तन है।

तो, आपके पास कुछ बेहतर दिन हो सकते हैं, कुछ और उम्मीद भरे दिन, और फिर आप वापस आएँगे और इस तरह से भी आप थोड़ा और निराश महसूस करेंगे। और इसलिए यह वास्तव में एक बहुत ही यथार्थवादी तस्वीर है जो हमें उन लोगों के भजनों में मिलती है जो अकेलेपन और त्याग की भावनाओं से जूझ रहे हैं, क्योंकि यह लगभग ऐसा है, आप जानते हैं, यह बदलाव कि एक पल आप अच्छा महसूस करते हैं, और फिर अगले ही पल आप फिर से संघर्ष कर रहे होते हैं। और इसलिए, आखिरकार, यहाँ विलाप एक प्रक्रिया है।

तो, यह सिर्फ ऊपर की ओर बढ़ने वाली गति नहीं है जैसा कि हम सोचते हैं। यह हमेशा इतना सुसंगत नहीं होता है, आप जानते हैं, इस तरह से आगे बढ़ना। इसलिए ऐसे क्षण होते हैं जब हम ज़्यादा उम्मीद महसूस करते हैं, ऐसे क्षण जब हम थोड़ी ज़्यादा निराशा महसूस करते हैं।

और इसलिए भजन वास्तव में भावनाओं के इस बदलाव में भी इसे दर्शाता है। तो फिर यहाँ **verse** **verses** दो से चार में आप पाते हैं, यह कहता है, मेरी आत्मा परमेश्वर के लिए, जीवित परमेश्वर के लिए प्यासी है। मैं कब जाकर परमेश्वर से मिल सकता हूँ? मेरे आँसू दिन-रात मेरा भोजन रहे हैं, जबकि लोग दिन भर मुझसे कहते रहते हैं, तुम्हारा परमेश्वर कहाँ है? ये बातें मुझे याद आती हैं

जब मैं अपनी आत्मा को उंडेलता हूँ, कि कैसे मैं उत्सव की भीड़ के बीच खुशी और स्तुति के नारे लगाते हुए शक्तिशाली परमेश्वर की सुरक्षा में परमेश्वर के घर जाता था।

और इसलिए यहाँ, यहाँ एक ऐसे व्यक्ति को प्रस्तुत किया गया है जो ईश्वर के सामने आने की अपनी इच्छा से जूझ रहा है, लेकिन अकेला और परित्यक्त महसूस कर रहा है। और इसलिए यहाँ वह है अपने विचारों से जूझते हुए। हिब्रू को is-literally-literally means परमेश्वर के सामने उपस्थित होना था।

तो, यह कल्पना भगवान के मंदिर में उनके सामने आने को संदर्भित करती है, जिसे अध्याय 43 में psalmist-psalmist's अधिक स्पष्ट रूप से बताया गया है। भगवान के मंदिर में उनके सामने आना समुदाय के भीतर उपस्थिति और दूसरों के साथ भगवान की उपस्थिति का आनंद लेने की ओर भी इशारा करता है। तो, आप यहाँ देख सकते हैं, यह केवल भगवान के सामने आने के बारे में नहीं है, बल्कि समुदाय के भीतर भी है और वह अपने अतीत की तुलना कैसे करता है कि वह अब कैसे अकेला है और अपने समुदाय के साथ-साथ भगवान से भी दूर है।

तो यहाँ आप उसे अपने अतीत पर शोक मनाते हुए, अपने विचारों से निपटते हुए और इस बारे में सोचते हुए देखते हैं कि वह इस समय कहाँ है। और फिर यह कहता है, आँसू दिन-रात उसका भोजन रहे हैं। तो, यह, यह साहित्यिक अभिव्यक्ति शोक की एक ऐसी तस्वीर पेश करती है जो सर्वव्यापी है।

तो, भजनकार यह व्यक्त कर रहा है कि कैसे उसका पूरा अस्तित्व दुःख से निगल लिया गया है और जो लोग इस तरह के गहरे दुःख का अनुभव करते हैं वे खाना नहीं खाते हैं क्योंकि वे दुःख से ग्रसित हैं। और इसलिए यहाँ इस बारे में बात की जा रही है कि कैसे, आप जानते हैं, वह, आप जानते हैं, आपने यहाँ पर दुःख ने उसे निगल लिया है। और इसलिए, भजनकार प्रार्थना में अपनी आत्मा को उंडेलते हुए अतीत के बेहतर दिनों को याद करता है।

वह चौथे पद में उन समयों को याद करता है जब उसने उत्सव के उत्सव में परमेश्वर के लोगों को आनन्द और स्तुति के नारे लगाने में नेतृत्व किया था। इसलिए, यह स्मरण उसे पाँचवें पद में अपनी आत्मा से बात करने के लिए प्रेरित करता है, जो कि दोहराया गया प्रतिध्वनि है इन दो छंदों में कई बार। और इसलिए यहाँ, यहाँ अपने चिंतन और संघर्ष के बीच में भी, वह इस प्रतिध्वनि को लाने के लिए आता है।

तो, यह प्रतिध्वनि इस तरह से दोहराई जाने वाली है। और इसलिए, पाँचवें श्लोक में, यह कहता है, हे मेरे मन तू क्यों उदास है? मेरे भीतर इतना व्याकुल क्यों है? अपनी आशा परमेश्वर पर रखो, क्योंकि मैं फिर भी उसकी स्तुति करूँगा, मेरे उद्धारकर्ता और मेरे परमेश्वर। तो, यह फिर से अधिक आशापूर्ण क्षणों में है क्योंकि वह देख रहा है कि वह उस तरह से अपनी आत्मा को प्रतिबिंबित और बोल रहा है।

इसलिए, दुःख हमें अतीत के उन दिनों की याद दिलाता है जो ज़्यादा सुखद थे। तो आपने इसे थोड़ा पहले देखा। तो, एक तरह की बात, आप जानते हैं, अतीत में बेहतर दिन थे।

आप जानते हैं, लोग इस अर्थ में तेजी से देखते हैं। हालाँकि, इस अवसाद में डूबने के बजाय, आप जानते हैं, और जब वह अतीत को याद करता है, तो वह वास्तव में है वह अपनी आत्मा से बात करने के लिए प्रेरित हुआ। तो, यह पहली बार है कि हम निराशा और आगे बढ़ने की इच्छा के बीच इस तरह के बदलाव को देख रहे हैं।

और इसलिए यहाँ, इस तरह से इसे पहचानना। और इसलिए, इस छंद और एक संक्षिप्त उपदेश के बाद, भजनकार अपने विलाप पर लौटता है। इसलिए, वह एक और कल्पना प्रस्तुत करता है जो पानी से संबंधित है।

तो फिर, यह एक परिवर्तन है। तो, वह अपनी हताशा के बारे में बात कर रहा है। वह उन कुछ चीजों के बारे में बात कर रहा है जो उसने अनुभव की हैं, कि अतीत में चीजें कैसी थीं।

और फिर वह एक और छवि पर वापस आता है जो उसके, आप जानते हैं, यहाँ उसके दर्द को व्यक्त करती है। और इसलिए इस बार, प्यास या अंतहीन आँसू के बजाय, इसलिए फिर से, यहाँ पानी से निपटने वाले, वह एक और छवि प्रस्तुत कर रहा है जो दुःख से अभिभूत होने की उसकी भावनाओं का वर्णन करती है। इसलिए, यह बहुत ही मनोरम है क्योंकि वह सोच रहा है और वर्णन कर रहा है कि वह किस दौर से गुज़र रहा है।

इसलिए जबकि भजन में गहरे समुद्र की छवि अक्सर अराजकता की उनकी आदिम छवियों की ओर इशारा करती है, जो यहाँ भी मौजूद है, वाक्यांश गहरा गहरा पुकारता है, यह भी रूपक रूप से अराजकता की भावनाओं को व्यक्त कर सकता है, जिसमें भजनकार केवल उसी को पुकारता है जो उसके दर्द की गहराई को समझता है। और इसलिए अकेलापन हमें दूसरों से समझ की गहराई की लालसा पैदा कर सकता है। और इसलिए यहाँ, जब गहरा गहरा पुकारता है।

इसलिए, जब हम अपने दिल में दर्द की खाई का अनुभव करते हैं, तो ईश्वर ही एकमात्र ऐसा है जो इसे भर सकता है। इसलिए, हमारा दिल केवल उसी तक पहुंचता है जो अकेलेपन की उस खाई को भरने के लिए काफी गहरा है। और इसलिए यहाँ, श्लोक सात कहता है, तेरे झरनों की गर्जना में गहराई गहराई को पुकारती है, तेरी सभी लहरें और लहरें मुझे बहा ले गई हैं।

और इसलिए यहाँ, यहाँ इस तरह की कल्पना है। और इसलिए यहाँ, भजनकार बाढ़ के पानी, उफनती लहरों की इस कल्पना का वर्णन करना जारी रखता है। इसलिए व्यावहारिक रूप से इनकी व्याख्या भजनकार पर लहरों और टूटती लहरों की भावनाओं के रूप में की जाती है।

इसलिए वह बता रहा है कि कैसे पानी की लहरें उसे पानी के नीचे रखती हैं। इसलिए अगर आपने कभी यहां लहरों के नीचे फंसने का अनुभव किया है, तो आप जानते हैं, यहां कई बार सतह से बाहर निकलना भी मुश्किल होता है, जैसे सांस लेना और सांस लेना। इसलिए आपको ऐसा लगता है कि आपका कोई पैर नहीं है।

जैसे आप अपनी पकड़ खो चुके हैं। आप सांस भी नहीं ले पा रहे हैं। ये सभी लहरें ऐसी ही हैं।

तो, यह एक तरह की कल्पना है जिसे वह यहाँ चित्रित कर रहा है ताकि हम उस तरह के अकेलेपन को पहचान सकें, जिस तरह से वह अपने दिल में भी अभिभूत महसूस कर रहा है। इसलिए कोई पैर न होने के कारण, लहरें आपके सिर के ऊपर से आती और गुजरती रहती हैं। और इसी तरह, गहरी भावनात्मक पीड़ा और दुख सांस फूलने या धड़कन बढ़ने जैसी शारीरिक भावनाओं में प्रकट हो सकता है, जिससे हमें अपनी सांस पकड़ने की भी इच्छा होती है।

और इसलिए यहाँ, इस तरह के भारी दर्द का वर्णन है जिसे हम कभी-कभी महसूस कर सकते हैं। और इसलिए यहाँ, कई बार, तीव्र रोने से भी हमारी साँस फूल सकती है। ये चित्र उस व्यक्ति की तस्वीर पेश करते हैं जो वास्तविक भावनाओं को स्वीकार कर रहा है।

और इसलिए, वह उनसे बचने की कोशिश नहीं कर रहा है, बल्कि उनका सामना कर रहा है, भले ही यह आसान न हो। और इसलिए, विलाप के बारे में सबसे कठिन बात इन दर्दनाक भावनाओं से निपटना है, बजाय इसके कि उन्हें जल्दी से दूर कर दिया जाए। और इसलिए आप यहाँ पाते हैं कि भजनकार, आप जानते हैं, अलग-अलग कल्पना के साथ वापस आ रहा है।

वह सिर्फ आगे बढ़कर यह नहीं कह रहा है कि, मैं बस दुखी हूँ या मैं बस अकेला हूँ। वह वास्तव में इन भावनाओं में से कुछ के माध्यम से काम करना और उनके बारे में सोचना, यहां तक कि अलग-अलग तरीकों से और अलग-अलग चित्रों, शब्द चित्रों के माध्यम से और यह स्वीकार करना कि वह इस स्थिति से कैसे गुजर रहा है। और इसलिए, भगवान के प्यार की एक संक्षिप्त पुष्टि के बाद, वह सवाल करना जारी रखता है कि भगवान ने उसे क्यों भुला दिया है।

और इसलिए यहाँ, इसका वर्णन किया गया है। और फिर, तो आप इसे फिर से देखते हैं, यह परिवर्तन कैसे वह शत्रुओं के उत्पीड़न के तहत विलाप करता है। और इसलिए, यह पहली बार है कि भजन शत्रुओं के बारे में बात करता है।

अध्याय 43 में भी इसी तरह के वाक्यांश और प्रश्न दोहराए गए हैं। तो ये आयतें वास्तव में भजनकार के अपने शत्रुओं के साथ अनुभव के इर्द-गिर्द एक रूपरेखा बनाती हैं। और इसलिए यह महत्वपूर्ण है क्योंकि कभी-कभी जब हम अपने शत्रुओं या विरोधियों की उपस्थिति देखते हैं तो हमें परमेश्वर की अनुपस्थिति और हमारा अकेलापन अधिक तीव्रता से महसूस होता है।

इसलिए, जब हमारे साथ कोई नहीं होता, तो हम और भी अलग-थलग महसूस करते हैं और कोई भी हमारा साथ नहीं देता। इसलिए, हमें ऐसा लगता है कि, आप जानते हैं, कोई भी ऐसा नहीं है जो हमारा साथ दे। और इसलिए यह एक तरह से, आप जानते हैं, इसके चारों ओर एक ढांचा बनाता है।

इसलिए, 42.9 में, मैं परमेश्वर से कहता हूँ, हे मेरी चट्टान, तूने मुझे क्यों भुला दिया? मैं शत्रु द्वारा सताए जाने पर क्यों शोक मनाता फिरेँ? और फिर 43.2 में, यह है बहुत समान। तुम मेरा गढ़ हो। तुमने मुझे क्यों अस्वीकार कर दिया? मुझे दुश्मन द्वारा सताए जाने पर शोक क्यों मनाना चाहिए? और इसलिए यहाँ, ऐसा लग रहा है जैसे कोई वकील नहीं है।

मैं बहुत अकेला महसूस करता हूँ। भगवान कहाँ है? Where's Where is लोग, अतीत के लोग? और इसलिए वह भी यह सब व्यक्त करने की तरह है। इसलिए वह दुख का ऐसा वर्णन करता है जो उसके दर्द को दर्शाता है।

और यह बात उसकी हड्डियों तक महसूस की जाती है। और इसलिए इसका यहाँ बहुत ही ग्राफिक है। यह एक छवि है जो मौखिक तानों के साथ मिलकर पीड़ा की और भी अधिक ग्राफिक तस्वीर के रूप में दी गई है जिसे वह पद 10 में महसूस करता है।

और यहीं पर वह अपनी आत्मा की पिछली पंक्ति को फिर से दोहराता है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, ये भजन शोक और आशा की इच्छा के बीच झूलते हैं। और इसलिए यहाँ वह अपने समुदाय सहित ईश्वर की उपस्थिति में रहने की लालसा कर रहा है।

लेकिन वह एक दुश्मन के बीच में भगवान द्वारा त्यागा और अस्वीकार किया हुआ भी महसूस कर रहा है। तो यहाँ, यह वह जगह है जहाँ वह कहता है, मेरी हड्डियाँ प्राणघातक पीड़ा से पीड़ित हैं क्योंकि मेरे दुश्मन मुझे ताना मारते हैं, दिन भर मुझसे कहते हैं, तुम्हारा भगवान कहाँ है? हे मेरे प्राण, तुम क्यों उदास हो? तुम मेरे भीतर क्यों परेशान हो? अपनी आशा भगवान पर रखो, क्योंकि मैं अभी भी उसकी स्तुति करूँगा, मेरे उद्धारकर्ता और मेरे भगवान। और इसलिए आप फिर से देखते हैं, यह परिवर्तन, यहाँ इस तरह का व्यवहार, इस तरह की बात करना कि वह इस तरह से किससे निपट रहा है।

तो फिर अध्याय 43 में प्रार्थना जारी रहने पर, भजनकार अब एक अधिवक्ता की अपनी इच्छा को प्रकट करता है। वह एक वकील की मांग कर रहा है। वह चाहता है कि परमेश्वर उसे सही साबित करे और अधर्मियों के खिलाफ अपना मामला लड़े।

So, वह छल-कपट और दुष्टों से मुक्ति की प्रार्थना करता है, जबकि यह स्वीकार करता है कि परमेश्वर का गढ़ उसके पास है। और वह फिर से वैसा ही झिझकता है जैसा उसने किया था। इसलिए यहाँ, वह परमेश्वर द्वारा उसे त्याग दिए जाने पर सवाल उठाने के लिए बहुत ही समान शब्दों का उपयोग करता है और अपने शत्रुओं के उत्पीड़न के तहत विलाप करता है।

हालाँकि, अपने दर्द में डूबने के बजाय, वह परमेश्वर से प्रार्थना करता रहता है कि वह उसे पवित्र पर्वत पर ले जाने के लिए प्रकाश, सत्य और विश्वासयोग्यता भेजे। इसलिए, यह प्रार्थना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दर्शाती है कि भजनकार जानता है कि केवल परमेश्वर की उपस्थिति में ही उसे वह शांति मिलेगी जिसकी वह वास्तव में इच्छा करता है। इसलिए, यहाँ यह दिलचस्प है कि हम इसके बारे में सोचते हैं और हम इसे कैसे देख सकते हैं।

इसलिए यहाँ, हे मेरे परमेश्वर, मुझे निर्दोष ठहराओ और विश्वासघाती राष्ट्र के विरुद्ध मेरा पक्ष लो। मुझे उन लोगों से बचाओ जो धोखेबाज़ और दुष्ट हैं। और इसलिए यहाँ, यहाँ एक वकील की मांग कर रहा हूँ क्योंकि वह यहाँ भी यही देख रहा है।

और इसलिए ये कुछ ऐसे वर्णन हैं जो विलाप, शिकायत, और ऐसी चीज़ों के बारे में हैं जो वह अनुभव कर रहा है। तो, आप भजन में उस तत्व को देख सकते हैं और उन सभी शब्द चित्रों और

तरीकों को देख सकते हैं जिनसे वह खुद को व्यक्त कर रहा है, जिस तरह से वह अकेलापन महसूस कर रहा है। यह उसके चित्रण और उन चीज़ों में बहुत ईमानदार है जो वह अनुभव कर रहा है।

वह इसे परमेश्वर के सामने रख रहा है और वास्तव में परमेश्वर से कुछ करने के लिए कह रहा है और अनुरोध भी कर रहा है। तो आपके पास है ~~here the motivation~~ the motivation here। तो यहाँ, परमेश्वर के कार्य करने या आगे बढ़ने के लिए दिए गए कारण मुख्य रूप से परमेश्वर के चरित्र में निहित हैं जैसा कि उसके औचित्य के अनुरोध में दिखाया गया है।

इसलिए, उसने परमेश्वर से कार्य करने के लिए कहा क्योंकि उसके शत्रु धोखेबाज और अन्यायी हैं। और इसलिए यहाँ, प्रेरणाओं के बारे में हमने यहाँ बात की। भजनकार परमेश्वर से ऐसा करने के लिए क्यों कह रहा है? वह यहाँ इस तरह से कह रहा है।

वह परमेश्वर के साथ अपने घनिष्ठ सम्बन्ध का भी हवाला देता है। अपने संघर्ष और संदेह के बीच में भी वह परमेश्वर को अपना परमेश्वर, अपना गढ़, अपना उद्धार, अपनी चट्टान, अपना असीम आनन्द कहता रहता है। और इसलिए यहाँ भी परमेश्वर के साथ उसके इस रिश्ते के लिए इस तरह की अपील है।

तो, इस तरह की प्रेरणा के बारे में सोचते हुए वह ईश्वर से भी अपील करता है जो उसे बचाता है और उसकी रक्षा करता है क्योंकि वह अपने दुश्मनों के सामने अपनी असहायता को पहचानता है। और वह उस ईश्वर को पुकारता है जिस पर वह भरोसा करता है।

तो यहाँ, अपने संदेहों और ईश्वर की उपस्थिति से दूरी की भावना में भी, वह अभी भी उस रिश्ते की वास्तविकता को स्वीकार कर रहा है जो उसके पास प्रभु के साथ है। और इसलिए यहाँ यह महत्वपूर्ण है। तो भले ही, आप जानते हैं, वह पूछ रहा है, आप जानते हैं, इस बीच में ईश्वर कहाँ है? आप जानते हैं, यहाँ क्या ~~what's~~ हो रहा है? वह साथ ही यह भी पहचान रहा है कि अभी भी एक रिश्ता है।

SoSo, वह उस तरीके को याद कर रहा है जिस तरह से मैं इसे चित्रित करता हूँ। वह अंधेरे में याद कर रहा है कि उसने प्रकाश में क्या देखा है। और इसलिए यहाँ, यह विलाप का एक महत्वपूर्ण पहलू है क्योंकि जब हमारी भावनाएँ हम पर हावी हो जाती हैं तो हम आसानी से अपनी वास्तविकता को भूल सकते हैं।

तो कभी-कभी हम, आप जानते हैं, वास्तव में यहाँ SoSo पहचान नहीं पाते हैं। अंधकार और अकेलापन कभी-कभी, आप जानते हैं, हमारी दृष्टि को रंग दे सकता है ताकि हम वास्तव में इस तरह से स्पष्ट रूप से SoSo नहीं देख सकें। हमारे पास जो है वह यह है कि हम यहाँ भजनकार को परे देखते हुए देखते हैं।

SoSo, ऐसे समय में, आप जानते हैं, यह पहचानना कि वह परे देख सकता है और हम प्रार्थना कर सकते हैं और फिर भी जान सकते हैं कि परमेश्वर अभी भी हमारा परमेश्वर है। और यह कि भले ही हमें ऐसा लगे कि वह हमें भूल गया है, वह यहाँ अच्छी तरह से उदाहरण देता है कि, आप

जानते हैं, उसने पहचाना कि परमेश्वर कौन है और उसका परमेश्वर के साथ कैसा रिश्ता है, यहाँ तक कि उसमें भी। इसलिए वह परमेश्वर और उसके साथ अपने रिश्ते के बारे में जो कुछ भी सच जानता है, उसे नहीं छोड़ता।

इसलिए भले ही वह ऐसा महसूस करता है, लेकिन वह खुद को इस तरह से याद दिलाता है। और इसलिए यह वह जगह है जहाँ, आप जानते हैं, यहाँ विश्वास की यह स्वीकारोक्ति और सुनी जाने का आश्वासन है। इसलिए, आप जानते हैं, अन्य भजनों के विपरीत, यह वह जगह है जहाँ यह अलग है।

सुनवाई के आश्वासन या स्वीकारोक्ति तक का यह संक्रमण, आप जानते हैं, यह उतार-चढ़ाव भरा होता है। तो फिर, यह सिर्फ एक सीधा-सादा प्रक्षेप पथ नहीं है, बल्कि अवसाद और विश्वास की स्वीकारोक्ति के बीच है, आप जानते हैं, इसलिए सबसे स्पष्ट स्वीकारोक्ति उस प्रतिध्वनि में देखी जाती है जिसे हम बार-बार देखते हैं। आप जानते हैं, मेरी आत्मा तुम क्यों उदास हो? मेरे भीतर क्यों परेशान हो? अपनी आशा ईश्वर पर रखो और मैं उसकी स्तुति करूँगा।

सुने जाने के आश्वासन के संदर्भ में शिक्षाप्रद है क्योंकि यह उदाहरण देता है कि हम वास्तव में अपनी आत्मा से कैसे बात कर सकते हैं, यहाँ तक कि विलाप के बीच में भी। और इसलिए यहाँ हम खुद से बात कर सकते हैं। और इसलिए यहाँ पर तब भी लोग मौजूद रहते हैं, जब आस-पास कोई नहीं होता।

इसलिए जब आप अकेलेपन से जूझ रहे हों, जब आप लोगों या परमेश्वर द्वारा त्यागे जाने का अनुभव कर रहे हों, तब भी हम अपनी आत्मा से बात कर सकते हैं, जैसा कि भजनकार ने हमें दिखाया है। आप प्रोत्साहन या आशा के शब्द बोल सकते हैं। **SoSo**, यही वह समय है जब हमें अपनी आत्मा से बात करने की आवश्यकता होती है, जब हमें ऐसा लगता है कि हमारे आस-पास कोई नहीं है, और हमें अपने आप को उस बात से प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है जिसे हम ईश्वर के बारे में सत्य जानते हैं।

तो फिर, हम यहाँ प्रकाश में जो जानते हैं, हम अंधेरे में भी बोल सकते हैं। इसलिए अकेले होने का मतलब यह नहीं है कि आपको निराशा या वीरानी का रास्ता अपनाना है। हम अभी भी उन आवाज़ों के विपरीत आशा बोल सकते हैं जो हम सुनते हैं।

**SoSo**, निराशा के गर्त में गिरना आसान है क्योंकि जब हमें लगता है कि हमारे पास कोई नहीं है जो हमारी परवाह करता है तो आत्म-दया की आवाज़ प्रबल हो जाती है। लेकिन यहाँ हमें अपनी आत्मा से बात करने की ज़रूरत है, जहाँ हमें परमेश्वर के वचन का उपयोग करना है। और इसलिए चाहे वह भजन के माध्यम से हो या अपनी आत्मा से परमेश्वर का वचन बोलना हो, मुझे लगता है कि यही है वास्तव में इस तरह से हमें आशा प्रदान करना हमारे लिए बहुत शक्तिशाली है।

और इसलिए परमेश्वर एक ऐसा परमेश्वर है जो अभी भी बचाता है। परमेश्वर एक ऐसा परमेश्वर है जो अभी भी बचाता है। ऐसी बातें जिनके बारे में हम रोमियों की पुस्तक में भी सोच सकते हैं कि कुछ भी हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकता।

के बीच भी, शास्त्र से सत्य और आशा के शब्द बोलना महत्वपूर्ण है क्योंकि हम इसके बारे में सोचते हैं। और इसलिए दिलचस्प बात यह है कि यह दोहे मरियम द्वारा उसकी आत्मा से नहीं कहे गए हैं। वह वास्तव में अपनी आत्मा को परमेश्वर पर भरोसा रखने और उसका इंतज़ार करने का आदेश दे रहा है।

तो यह भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ उम्मीद या इंतज़ार के लिए हिब्रू क्रिया का अर्थ है आज्ञा। यह आज्ञाकारी रूप में है। यह यहाँ सिर्फ़ एक कथन नहीं है।

यह सिर्फ़ इतना नहीं है कि, ठीक है, आप जानते हैं, प्रोत्साहन के लिए ऐसा करें। यह वास्तव में आदेशात्मक। और इसलिए यहाँ, यह कई विकल्पों में से एक सुझाव या यहाँ तक कि एक इच्छा या एक बयान नहीं है।

यह एक आदेश है seSo, यह एक महत्वपूर्ण अनुस्मारक है कि हमें सच बोलने की जरूरत है। यह कोई सुझावात्मक तरीका नहीं है जिससे हम इसके बारे में सोचते हैं।

यह हमारे लिए एक आदेश है कि हम ईश्वर पर भरोसा करें और उस पर आशा रखें, तब भी जब हम ऐसा करने का मन न करें। और इसलिए यहाँ, अपनी भावनाओं और अपने दर्द से जूझते हुए भी, हम उस अर्थ में भी सच बोल सकते हैं। तो विलाप की प्रक्रिया बिल्कुल वैसी ही है।

यह एक प्रक्रिया है। इसलिए हम परमेश्वर के सामने अपने दर्द और अपनी इच्छाओं को स्वीकार करते हैं, लेकिन एक समय ऐसा भी आता है जब हमें अपनी आत्माओं को शास्त्र की सच्चाई पर ध्यान देने की आज्ञा देनी होती है। और इसलिए हमें आगे बढ़ने की इच्छा रखने और परमेश्वर ने अपने बच्चों के लिए जो वादा किया है और करना जारी रखा है, उस पर अपनी नज़र रखने की ज़रूरत है।

seSo, हम अपनी आत्माओं को भी सक्रिय रूप से प्रतीक्षा करने और प्रभु में आशा रखने की आज्ञा देते हैं। और इसलिए यहाँ, यहाँ फिर से, यहाँ प्रतीक्षा के लिए हिब्रू शब्द का अर्थ आशा करना भी है। इसलिए हम सिर्फ़ निष्क्रिय होकर प्रतीक्षा करते हुए बैठे नहीं रहते और अपनी भावनाओं में डूबे नहीं रहते।

नहीं, हम वास्तव में उम्मीद करना, सक्रिय रूप से उम्मीद करना और भरोसा करना कि ईश्वर हमारी मदद करेगा। और इसलिए व्यावहारिक रूप से कहें तो इसका मतलब है कि हम एक पैर दूसरे के सामने रखकर विश्वास में आगे बढ़ने जा रहे हैं। हम वह करने जा रहे हैं जो ईश्वर ने हमें करने के लिए दिया है, विश्वास करते हुए कि ईश्वर वह बदलाव लाएगा जिसकी हम उम्मीद कर रहे हैं।

इसलिए, हम अपना चेहरा धोएँगे, अपने कपड़े पहनेंगे, टहलने जाएँगे, उस दोस्त को फ़ोन करेंगे, उस मंत्रालय में सेवा करेंगे और अपने दर्द के बीच भी दूसरों से जुड़ने के लिए अपनी आँखें आगे रखेंगे। और इसलिए यहाँ, यह एक तरह से ऐसा है, जब आप इन चीज़ों से गुज़र रहे होते हैं, तो

एक समय ऐसा भी आता है, जब, आप जानते हैं, हमें खुद से सच बोलने की ज़रूरत होती है। हमें वफ़ादार होने की ज़रूरत है।

हमें ईश्वर पर आशापूर्ण, सक्रिय प्रतीक्षा करने और ऐसा करने के लिए वफ़ादार होने की ज़रूरत है, न कि सिर्फ़ अपनी जगह पर बैठे रहने की। और इसलिए फिर से, यह एक प्रक्रिया है। यह हमेशा हमारे समय पर निर्भर नहीं करता है, लेकिन यह कुछ ऐसा है जिसे हम पहचान सकते हैं जब हम इसके बारे में सोचते हैं।

तो, चलिए अब हम स्तुति की इस प्रतिज्ञा की ओर बढ़ते हैं। तो इस तरह से परमेश्वर के होने, हमारी बात सुनने या खुद से बात करने की स्वीकृति के बारे में सोचना, स्तुति की यह प्रतिज्ञा है। तो यह ज़्यादातर 43.4 में पाया जाता है, जहाँ भजनकार कहता है कि वह परमेश्वर की वेदी के सामने आगा, जो उसका आनन्द और उसकी स्तुति करने में प्रसन्नता है।

और इसलिए हम इसे यहाँ देख सकते हैं। मुझे अपना प्रकाश और अपनी वफ़ादार देखभाल भेजें। उन्हें मेरा मार्गदर्शन करने दें।

वे मुझे अपने पवित्र पर्वत पर ले चलें, उस स्थान पर जहाँ आप रहते हैं। तब मैं परमेश्वर की वेदी के पास जाऊँगा। परमेश्वर, मेरा आनन्द, मेरा आनन्द।

मैं झूठ बोलकर आपकी स्तुति करूँगा। हे भगवान, हे भगवान, मेरे भगवान। और इसलिए यहाँ, यहाँ स्तुति की इस प्रतिज्ञा को पहचानते हुए।

तो, यह परमेश्वर द्वारा भजनकार की अगुवाई करने के लिए अपना प्रकाश और सत्य भेजने पर आधारित है। इसलिए, भजनकार न केवल परमेश्वर के प्रकाश और विश्वासयोग्यता को अपनी अगुवाई करने देने की प्रतिज्ञा करता है, बल्कि यह भी कि वह भी आकर उसकी स्तुति करेगा। और इसलिए जब परमेश्वर आता है और अपना प्रकाश लाता है, तो वह इस तरह से आगे आने वाला है।

तो, इसमें भविष्य की दिशा है और यह महत्वपूर्ण है। तो वह इस उम्मीद में आगे देख रहा है कि वह परमेश्वर की स्तुति करने जा रहा है। इसलिए यह सिर्फ़ फाइनल नहीं है, हालांकि, आप जानते हैं, यहां एक अधिक आशावादी तत्व भी है।

यह भी है कि ये आयतें अंतिम शब्द नहीं हैं। वास्तव में आपके पास अंतिम शब्द है, भजन में दोहराया गया वह वाक्य। तो यहाँ जो दिखाया गया है वह यह है कि यह इस बात को पुष्ट करता है कि हमारी भावनाएँ चंचल हैं।

तो यहाँ, भले ही ऐसे आशा भरे क्षण हों कि हम भविष्य के प्रति अधिक उन्मुख हो सकें, लेकिन ऐसे क्षण भी होते हैं जब हमें अपने दिलों से सच्चाई के शब्द बोलने पड़ते हैं। और इसलिए, हम एक पल में आशा से भर सकते हैं, लेकिन हमें अपनी आत्मा से बात करना जारी रखना होगा क्योंकि हम आसानी से निराशा में पड़ सकते हैं। और इसलिए यहाँ, जब हम कठिनाइयों से विलाप करते हैं, तो हम उनका ईमानदारी से सामना कर रहे होते हैं।

सच तो यह है कि हम अपनी भावनाओं से अकेले नहीं निपटते, बल्कि हम अपनी निराशा के बीच भी आशावान बने रहते हैं। और हमें अपनी निराशा में भी नहीं रहना है। और इसलिए यहाँ भजन संहिता की पुस्तक में पाए गए विभिन्न तत्वों को देखते हुए यह एक उदाहरण है।

और इसलिए, विशेष रूप से भजन 42 और 43 में। तो कुछ निष्कर्ष जो मेरे पास हैं, आप जानते हैं, यहाँ एक विशेष उदाहरण के साथ चलने के बाद भी, वह यह है कि, आप जानते हैं, बाइबिल के विलाप को पुनः प्राप्त करना केवल अवधारणा को समझने से कहीं अधिक है। यह यहाँ केवल विलाप की अवधारणा के बारे में नहीं है।

यह शास्त्रों से सीखना है और विलाप की शैली को हमारे अभ्यास को सूचित करने देना है। और इसलिए यहाँ, जैसा कि हम शास्त्रों को देखते हैं, जैसा कि हम विलाप की शैली को देखते हैं, आप जानते हैं, जैसा कि हम पाते हैं कि हम अनिश्चितता और पीड़ा से निपट रहे हैं जो हमारे चारों ओर है, आइए याद रखें, आप जानते हैं, कि हम शास्त्रों से सीख सकते हैं, कि शास्त्र हमें हमारे आस-पास की चीज़ों से जुड़ने में मदद करता है। तो कुछ महत्वपूर्ण बिंदु जो मैं यहां वापस लाना चाहता था, वह यह है कि विलाप दुःख और उपचार की प्रक्रिया का एक आवश्यक हिस्सा है।

और इसलिए यहाँ, हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम इसे एक तरफ़ न धकेलें, चीज़ों से निपटें नहीं, आप जानते हैं, बस उन्हें अनदेखा करें या ऐसी चीज़ों के बारे में सोचें जिनके बारे में हम सोचना शुरू करते हैं, कि हम वास्तव में दर्द से कैसे निपटें? लेकिन यह है दरअसल, हमारे लिए शोक मनाना, इस तरह से उपचार प्रक्रिया को आगे बढ़ाना महत्वपूर्ण है। और फिर यह भी पहचानना कि जबकि इज़राइल के पड़ोसी, प्राचीन निकट पूर्व संस्कृतियाँ, विलाप का अभ्यास करती हैं, हमारे पास बाइबिल का विलाप अलग है क्योंकि यह ईश्वर को अपील करता है जो हमें जानता है, हमारी परवाह करता है और हमारी ओर से कार्य करता है। यह है यह प्राचीन निकट पूर्व विश्व में जो मिलता है, उससे बहुत भिन्न है जो हम धर्मग्रंथों में पाते हैं।

इसलिए हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम उन अंतरों को देखें और उन्हें पहचानें और उनकी सराहना करें और पहचानें, आप जानते हैं, कि हमें इसे हल्के में नहीं लेना चाहिए, बल्कि वास्तव में परमेश्वर के सामने आना चाहिए कि उसने हमें इस तरह से और इन उदाहरणों के लिए कठिन समय के दौरान प्रार्थना करने के लिए पेश किया है। इसलिए विलाप कुछ ऐसा नहीं है जो हम अकेले करते हैं। इसलिए हम इसे अकेले कर सकते हैं, लेकिन हम इसे मसीह के शरीर के रूप में सामूहिक रूप से भी कर सकते हैं।

और इसलिए यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि हम इस अवधारणा के बारे में सोचते हैं, क्योंकि हम इसके बारे में सोचते हैं। और इसलिए विलाप केवल एक भावना या एक समान प्रतिक्रिया नहीं है। और इसलिए यहाँ, ऐसी कई चीज़ें हैं जिन पर हम विलाप कर सकते हैं, शास्त्रों ने हमें कई तरह के उदाहरण दिए हैं।

और इसलिए यहाँ, यह सिर्फ़ एक आयामी अवधारणा नहीं है। मुझे लगता है कि यह कई मायनों में बहुआयामी है और हमारे लिए बहुत गहरी बात है, आप जानते हैं, जब हम इसके बारे में सोचते

हैं तो हमें शास्त्रों में गहराई से जाना चाहिए। और इसलिए जब ईश्वर अनंत काल के इस तरफ़ काम नहीं करता है, तब भी विलाप हमें जीवन में आशा के साथ आगे बढ़ने में मदद करता है।

और इसलिए यहाँ, मैं जो कहना चाहता हूँ वह यह है कि विलाप कोई रामबाण उपाय नहीं है। यह आपकी सभी समस्याओं या ऐसी किसी भी चीज़ को हल करने के लिए नहीं है, लेकिन यह वास्तव में यह हमें हमारी निराशा और संघर्षों तथा जीवन की कठिनाइयों से आगे बढ़ने में मदद करने के लिए है, ताकि हम वास्तव में अधिक आशा की ओर बढ़ सकें। वास्तव में यह हमारी सहायता करने के लिए है, भले ही हम इस संसार में रहते हैं और इन चीज़ों से संघर्ष करते हैं, ताकि हम परमेश्वर की उपस्थिति में आ सकें, उनमें विश्वास कर सकें, तथा अधिक लचीलेपन और आशा के साथ आगे बढ़ सकें।

और मुझे उम्मीद है कि, आप जानते हैं, इस समय के दौरान आप यहाँ की सराहना करने में सक्षम होंगे और शायद लिखने में भी सक्षम होंगे इस तरह से अपने कुछ विलापों को व्यक्त करें। और इसलिए जीवन में ऐसी परिस्थितियाँ होती हैं जिनका हम सामना करते हैं जो अपरिवर्तनीय होती हैं। इसलिए, प्रियजनों के खोने की तरह, आप जानते हैं, ऐसे अन्य समय भी होते हैं जहाँ विलाप करने का अभ्यास ईश्वर द्वारा उस परिवर्तन को लाने में हल नहीं होता है जिसे हम चाहते थे।

इसलिए इन परिस्थितियों में, विलाप हमें परमेश्वर के करीब ला सकता है, क्योंकि हमें याद दिलाया जाता है कि अंतिम आशा जरूरी नहीं कि यहीं और अभी मिल जाए, बल्कि परमेश्वर हमें वह अनुग्रह और शक्ति देता है जिसकी हमें हर दिन जरूरत होती है। और इसलिए, आप जानते हैं, जब हम नए नियम और पौलुस के काँटे के उदाहरण के बारे में सोचते हैं, तो आप जानते हैं, परमेश्वर ने उसे दूर नहीं किया, बल्कि उसने कहा कि उसका अनुग्रह पर्याप्त था। और इसलिए, पौलुस ने अपने दुखों में, अपनी कमज़ोरियों में भी परमेश्वर की शक्ति को देखना सीखा।

और इसलिए भले ही परमेश्वर हमेशा उस तरह से प्रतिक्रिया न दे जैसा हम चाहते हैं, हम निश्चित हो सकते हैं कि वह हमें वह शक्ति प्रदान करेगा जिसकी हमें आवश्यकता है क्योंकि हम विलाप के माध्यम से भी उस अर्थ में अपना अनुरोध उसके पास लाते हैं। और इसलिए हम जानते हैं कि हमारी हल्की और क्षणिक परेशानियाँ हमारे लिए अनंत महिमा प्राप्त कर रही हैं जो उन सभी से कहीं अधिक है। और परमेश्वर कभी भी हमें वह सब देने का वादा नहीं करता जो हम चाहते हैं, लेकिन वह हमें इस जीवन में वह सब देने का वादा करता है जिसकी हमें आवश्यकता है और अगले जीवन में और भी अधिक।

इसलिए, विलाप हमें यह एहसास कराता है कि हमें वास्तव में उसकी जरूरत है। और शायद इसीलिए इतने सारे लोगों ने दर्द और भयानक परिस्थितियों के बीच में भी ज़्यादा आत्मीयता और उम्मीद का अनुभव किया है, जबकि उन्हें निराश होना चाहिए था। और इसलिए यहाँ, जब हम परमेश्वर के करीब आते हैं, तो यह हमें पराजित नहीं करेगा, बल्कि वास्तव में हमें बड़ी आशा की ओर भी ले जाएगा।

महान धन्यवाद।